समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• नवम्बर २०२२ • वर्ष ७३ • अंक ११

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

कोलकाता में आयोजित अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के दीपावली प्रीति मिलन समारोह में (बायें से) पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री कैलाशपति तोदी, पश्चिम बंग मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री बिजय गुजरवासिया, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री सुदेश अग्रवाल, स्वागताध्यक्ष श्री आनंद अग्रवाल, सेमिनार एवं समाज विकास उपसमिति के चेयरमैन श्री शिव कुमार लोहिया, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रह्लाद राय अगरवाला, मुख्य अतिथि श्री सज्जन भजनका, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री गोपाल अग्रवाल, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, पश्चिम बंग मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष बिजय डोकानिया, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ, मायड़ भाषा उपसमिति के चेयरमैन श्री रतनलाल साह, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री दामोदर बिदावतका, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका एवं कृष्ण कुमार सिंघानिया।

बधाई !

उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नव निर्वाचित अध्यक्ष-
श्री श्रीगोपाल तुलस्यान

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नव निर्वाचित अध्यक्ष-
श्री जुगल किशोर अग्रवाल

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की चतुर्थ बैठक पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में गुवाहाटी में आयोजित की गयी। बैठक का उद्घाटन करते (बायें से) राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री भानीराम सुरेका, पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन महामंत्री श्री अशोक कुमार अग्रवाल, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका, पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विवेक गुप्त एवं अरुण अग्रवाल।

Rungta Office, Nagar Parishad Complex, Chaibasa, Jharkhand- 833201
Email - tmtsales@rungtasteel.com

समाज विकास

◆ नवम्बर २०२२ ◆ वर्ष ७३ ◆ अंक ११
◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
● **सम्पादकीय : शिव कुमार लोहिया** सा विद्या या विमुक्तये	५-६
● **अध्यक्षीय : गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** "नारी तुम वन्दनीय हो"	७
● **रपट –**	
अखिल भारतीय समिति की बैठक	८-९
कागज और कलम इस दुनिया मे सबसे अच्छे साथी : सीताराम शर्मा	१०,१३
दीपावली प्रीति मिलन समारोह	११
● **प्रादेशिक समाचार** पूर्वोत्तर, उत्कल, उत्तर प्रदेश, झारखंड, दिल्ली, बिहार	१४-२५
● **विशेष**	
हरियाणा दिवस	२६
जमनालाल बजाज – जन्मजयन्ती पर विशेष	२७-२८
● **स्वास्थ्य ही धन है –** गर्म पानी सेहत के लिए कितना असरदार	२९
● **देव-स्तुति :** डॉ. जुगल किशोर सर्राफ	३०

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय : **४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७**
फोन : ०३३-४००४ ४०८९

पंजीकृत कार्यालय : १५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड कोलकाता - ७००००७

◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.in

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ **प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा** ◆ **सम्पादक : शिव कुमार लोहिया**

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

सम्मेलन के सभी सदस्यों के सादर ध्यानार्थ

८८वाँ स्थापना दिवस समारोह

मान्यवर,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का ८८वाँ स्थापना दिवस समारोह आगामी २५ दिसम्बर २०२२ (रविवार) को प्रात: १०.०० बजे से जी.डी. बिड़ला सभागार, (२९, आशुतोष चौधरी एवेन्यु, बिड़ला मंदिर के बगल में, कोलकाता – ७०००१०) में आयोजित किया गया है।

आपकी सपरिवार–सबांधव उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

भवदीय
संजय हरलालका
राष्ट्रीय महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
4बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला)
41, शेक्सपियर सारणी, कोलकाता-700 017

समाज से सादर निवेदन

वैवाहिक अवसर पर मद्यपान करना - कराना धार्मिक एवं सामाजिक दोनों रूप से उचित नहीं है।

प्री-वेडिंग शूट हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के खिलाफ है।

समाजहित में इनसे परहेज करें।

निमंत्रण में ई-कार्ड को बढ़ावा दें।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
८८वां स्थापना दिवस

प्रिय महोदय,

८७ वर्ष पूर्व १९३५ में हमारे दूरदर्शी पूर्वजो ने समाज को संगठित करने एवं उन्हें अपने अधिकारों से वंचित न होने देने के उद्देश्य से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना की थी। मारवाड़ी समाज की एकमात्र राष्ट्रीय प्रतिनिधि संस्था के रूप में सम्मेलन देश के २२ प्रान्तों में कार्य कर रहा है। दिन-प्रतिदिन समाज के लोग सम्मेलन से जुड़ रहे हैं। सदस्य संख्या तो बढ़ रही है किन्तु अभी तक इसे संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। इस दिशा में हम सबको मिलकर प्रयास करना होगा ताकि **'संगठित समाज, सशक्त समाज'** का सम्मेलन का नारा सफलीभूत हो सके। कोलकाता महानगर की कई संस्थाएँ भी सम्मेलन से सम्बद्ध हुई हैं, यह एक अच्छी शुरूआत है।

सम्मेलन का **८८वां स्थापना दिवस समारोह २५ दिसम्बर २०२२** को कोलकाता में मनाया जायेगा, जिसमें पूरे देश के प्रतिनिधि उपस्थित होंगे। इस अवसर पर सम्मेलन का सर्वोच्च **'मारवाड़ी सम्मेलन राजस्थानी व्यक्तित्व सम्मान'**, मारवाड़ी समाज के एक विशिष्ट व्यक्तित्व को देश अथवा समाज के प्रति उत्कृष्ट योगदान हेतु प्रदान किया जाएगा। साथ ही, सम्मेलन के मुखपत्र **समाज विकास** का एक पठनीय एवं संग्रहणीय विशेषांक प्रकाशित किया जाएगा।

सम्मेलन को प्रत्येक मौके पर आपका मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त होता आया है। इसी के बलबूते सम्मेलन अपनी शक्ति एवं ऊर्जा के साथ समाज-उत्थान के कार्यों को अंजाम दे पाता है।

इस विशेषांक को सफल बनाने में आपसे प्रकाशनयोग्य सामग्री तथा विज्ञापनरूपी सहयोग प्राप्त होगा, इसका पूर्ण विश्वास है।

आदर सहित

गोवर्धन प्र. गाड़ोदिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

शिव कुमार लोहिया
सम्पादक : समाज विकास

संजय हरलालका
राष्ट्रीय महामंत्री

भानीराम सुरेका, पवन कुमार गोयनका, पवन कुमार सुरेका,
अशोक कुमार जालान, डॉ. श्याम सुन्दर हरलालका, विजय कुमार लोहिया
राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण

आत्माराम सोंथलिया
चेयरमैन, वित्तीय उपसमिति

गोपाल अग्रवाल, सुदेश कु. अग्रवाल
राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री

बसंत कुमार मित्तल
राष्ट्रीय संगठन मंत्री

दामोदर प्रसाद बिदावतका
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

Advertisement Manager
SAMAJ VIKAS
4B, Duckback House (4th Floor)
41, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700017 (W.B.)
e-mail : aimf1935@gmail.com

Dear Sir,

Please publish a Special/Full/Half Page Advertisement in your Special Issue to be brought out on the occassion of 88th FOUNDATION DAY of AIMF.

Our cheque is enclosed/will be sent in due course on receipt of your bill.

Thanking you,

Sincerely Yours

Name ,,
Address ....
....
Phone / Mobile No...
e-mail...

(Signature)

Tariff

Back Cover Page (Colour)	Rs.	50,000/-
Inside Covers (Colour)	Rs.	30,000/-
Special Full Page (Colour)	Rs.	20,000/-
Full Page (Colour)	Rs.	15,000/-
Full Page (B & W)	Rs.	10,000/-

Mechanical Data

Overall Page Area	27x19cm
Print Area	22x16cm
No. of Columns	Two

All Cheques to "All India Marwari Federation"
G.S.T. No. 19AABTA0938Q1ZB, PAN No. AABTA0938Q, Bank : State Bank of India
Branch : Shakespeare Sarani (Kolkata), A/C No. 32028596548, IFSC CODE : SBIN0003031

सा विद्या या विमुक्तये

केन्द्रीय विद्यालय, दिल्ली में एक ११ वर्षीय छात्रा ने आरोप लगाया है कि ११वी एवं १२वी कक्षा के दो छात्रों ने उसके साथ विद्यालय प्रांगण में ही बलात्कार किया। एक अन्य घटना में उत्तर प्रदेश के अम्बेडकर नगर में एक १५ वर्षीय लड़की ने आत्महत्या कर ली। उसने एक नोट में लिखा है कि उसके साथ बलात्कार करने वाले आरोपियों को पुलिस पकड़ नही रही है, इससे निराश होकर वह आत्महत्या कर रही है। १५ सितम्बर २०२२ को विद्यालय जाते वक्त उस लड़की को अपहरण कर उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया गया। उस बालिका के पिता ने कहा है कि पुलिस ने इस घटना का संज्ञान लेते हुए अपहरण का जुर्म दर्ज किया है किन्तु बलात्कार की घटना का उल्लेख नही किया। एक अन्य घटना में चेन्नई के पास कुन्द्राथुर मे एक बढ़ई ने अपने १४ वर्षाय पुत्र से अपने मोबाईल पर समय व्यतीत नही करके पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान देने की बात डांटते हुए कहा। वह लड़का १०वीं कक्षा में पढ़ता था। बाहर से वापिस आने पर पिता ने देखा कि उसके पुत्र ने आत्महत्या कर ली है। इस घटना से दुखी होकर पिता ने भी आत्महत्या कर ली। ७ अक्टूबर २०२२ के समाचार पत्र में इन घटनाओं को मैंने एक-एक कर पढ़ा। इस तरह के समाचार हमें सोचने को मजबूर कर देते है कि आज की समाज व्यवस्था में नवयुवक किस प्रकार की परिस्थितियों से गुजर रहे है। साथ-साथ हमारी शिक्षा व्यवस्था नवयुवकों को किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं। कुछ दशक पहले इस प्रकार की घटना कोई सोच भी नहीं सकता था।

यह एक गंभीर मामला है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली से गुजरते हुए युवक-युवतियाँ डिग्री तो हासिल कर लेते हैं पर क्या वे मनुष्य बनने के लिये आवश्यक न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करना सीखते हैं? समाज मे आज भ्रष्टाचार, हिंसा, वैमनस्य छलावा का दौर चल रहा है। आज शिक्षा का उद्देश्य क्या सिर्फ नौकरी-रोजगार के लिये विद्यार्थियों को तैयार करना रह गया है? जो शिक्षा प्रणाली हमे मानव बनने की खूबियो से परिचित नहीं करवाता, उससे निकलकर विद्यार्थी आज नैतिकता एवं मौलिकता से कट जाते हैं। क्या यह आवश्यक नही कि हम समझे कि मानव के रूप में जन्म प्राप्त करना हमारे लिये सौभाग्य की बात है एवं मानव जीवन का लक्ष्य क्या है?

मानव अपने लगन, निष्ठा, मेहनत एवं दूरदृष्टि से जीवन में असीमित ऊँचाईयाँ प्राप्त कर सकता है, फिर भी अनभिज्ञता के कारण वह उसका लाभ नहीं उठा पाता। यह सोच गलत है कि नम्रता - करुणा, दया, एकाग्रता शिक्षा के द्वारा स्वतः ही आ जाता है। मानव का असली परिचय उसका व्यवहार ही है। शिक्षा व्यक्ति के विवेक को जागृत करने का साधन होना चाहिए। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद एक नाजी यातना शिविर में एक पत्र पाया गया। इसमें लिखा था "प्रिय अध्यापकों, मैं यातना शिविर मे बच जाने वालो में से एक हूँ। मेरी आँखो ने वह देखा है जो किसी को नहीं देखना चाहिए। पढ़े-लिखे इंजिनियरों ने गैस चेम्बर बनाये। उच्चशिक्षा प्राप्त डाक्टरों ने बच्चो को जहर दिया। नवजात शिशुओं को मारने वाली नर्से ही थी। औरत-बच्चों को मारने वाले स्नातक और स्नातकोत्तर थे। इसलियें मैं शिक्षा पर संदेह करता हूँ। मेरी ये ही प्रार्थना है कि विद्यार्थियों को मनुष्य बनना सिखाईये। आपके प्रयास पढ़े लिखे राक्षसो के निर्माण के लिये नही होना चाहिए। शिक्षा तभी महत्वपूर्ण है जब वह हमारे बच्चों को बेहतर इंसान बनाये।" पढ़े लिखे 'दानव' से अनपढ़ 'मानव' बेहतर है।

विद्या के संबंध मे विष्णुपुराण के प्रथम स्कंद के उन्नीसवें अध्याय के ५१वें श्लोक में कहा गया है –

तत्कर्म पन्न वन्धाय सा विद्या या विमुक्तये

अर्थात कर्म हमे बंधन मे डालता है एवं विद्या हमे मुक्त करती है। शिक्षा का अपेक्षित अभिप्राय वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे नहीं दिखता। विद्या के संबंध में एक अन्य मौलिक विचार है –

विद्या ददाति विनयम।

अर्थात विद्या विनय प्रदान करती है। आज एक अत्यधिक सुशिक्षित व्यक्ति में कितना विनय रहता है, हम सब जानते हैं। हमारे देश में युवाओं की बहुतायत है। समाज एवं देश का उज्ज्वल भविष्य विचारशील, संस्कारवान, चरित्रवान, क्षमतावान योग्य युवाओं पर निर्भर करता है। चरित्र हीनता की वजह से समाज में विभिन्न कुरुतियों एवं अनैतिकता को बढ़ावा मिलता है। आज मातृशक्ति, महिलाओं एवं छोटी बच्चियों के साथ जघन्य अपराध हो रहे हैं एवं विभिन्न प्रकार के अपराधों में युवाओ का एक तबका लिप्त है। देश में इसी कारण आज विभिन्न प्रकार के हिंसा के वारदात होते रहते हैं। इस समस्या का निदान सिर्फ कानून व्यवस्था से नही किया जा सकता है। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानंद के मानव निर्माण शिक्षा के संबंध मे विचार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। स्वामीजी शिक्षा को जीवन निर्माण का सर्वोत्तम साधन मानते थे। वे शिक्षा को सिर्फ जानकारी का पुलिंदा नहीं मानते थे। उनका मानना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे हमारा जीवन निर्माण हो सके एवं मनुषत्व की प्राप्ति हो सके। उनके अनुसार "शिक्षा मानव मे नीहित पूर्णता का प्रकाशन है"।

अर्थात मनुष्य मे पूर्णता पहले से ही विद्यमान है। शिक्षा उस पूर्णता की समझ प्रदान करता है। अपनी नासमझी के कारण अपनी खुबियों को वह समझ नही पाता एवं नाना प्रकार के व्यसनो एवं कामनाओं से ग्रस्त हो जाता है। उसका एक सुंदर वर्णन अंतिम मुगल शासक बहादुर शाह जफर ने अपनी रचना में किया था। उन्होंने लिखा –

ए मेरे खुदा तू ही बता
क्यों बनाया इंसान को खामियों का पुतला

उनके उस्ताद इब्राहिम जोस ने आवश्यक सुधार किया

एवं लिखा –

ए मेरे खुदा तू ही बता
क्यों नही इंसान को उसकी खुबियो का पता

इस प्रकार हम समझ सकते है कि सही नजरीया रखने से व्यक्ति मे सकारात्मकता का संचार होता है और वह अपने वास्तविक स्वरूप से परिचित होता है। सन् १९५७ में बैंगकाक के वाट ट्रेनिट मंदिर में बुद्ध की मूर्ति क्रेन के द्वारा एक नये स्थान पर ले जाया जा रहा था। संयोग से वह मूर्ति क्रेन से निकल कर जमीन पर गिर गई। फलस्वरूप मूर्ति में दरार पड़ गया। काम को रोक दिया गया। एक चिन्ताग्रस्त सन्यासी रात में टार्च की रोशनी मे उस मूर्ति को देखने आया। उसने देखा कि मूर्ति अंदर से चमक रही थी। वह आश्चर्य चकित हो गया। उसके बाद मूर्ति के उपर की मिट्टी को थोड़ा उतार कर देखने पर पता चला कि वह मूर्ति शुद्ध सोने की बनी हुई थी। उसका वजन पाँच टन था। ७०० वर्ष पुरानी मूर्ति कुछ सदियों पूर्व दुश्मनो की सेना से बचाने के उद्देश्य से उस मूर्ति पर मिट्टी का लेप चढ़ा दिया गया। शनैः-शनैः इस बात को सब भूलते गये एवं मूर्ति का बाहरी स्वरूप ही वास्तविक स्वरूप समझा जाने लगा। इसी प्रकार मानव जीवन भी अंदर से सोने के बुद्ध के समान अत्यंत मूल्यवान है। वह उत्साह, साहस, धैर्य, प्रेम, क्षमता आदि की सर्जन शक्ति के साथ इस जगत में आता हैं। पर अज्ञानवश वह अपने नैसर्गिक गुणों को पहचान नहीं पाता। इस विषय में स्वामी विवेकानन्द ने कहा था – 'हम दुर्बल है, इसलिये त्रुटि करते है। हमारी दुर्बलता का कारण हमारा अज्ञान है। शारीरिक विकास को वे शिक्षा का प्रथम उद्देश्य मानते थे। शारीरिक शिक्षा का तात्पर्य होता है शरीर का सुस्वास्थ्य। कितना सोचे, कब, कितना, क्या खायें, जीवन में मनोरंजन किस प्रकार करें। कब कितना व्यायाम करें। वे कहते थे – संसार मे कोई पाप है तो वह दुर्बलता है। स्वामी जी चाहते थे कि युवकों को इस प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाए जिससे वे आत्म श्रद्धा एवं आत्मविश्वास से भर जाए। ऐसे विद्यार्थी कभी भी स्वयं को दूसरे से कमजोर नहीं समझेंगे। यदि छात्रों को इस बात से अवगत कर दिया जाए कि उनके भीतर अनंत शक्ति, ज्ञान और अच्छाई है, जो कि खोजे जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो शिक्षा के प्रति उनके पूरे दृष्टिकोण में क्रांति आ जाएगी। ऐसा छात्र आशा, उत्साह एवं सकारात्मकता से परिपूर्ण रहेगा। उसे यह एहसास होगा कि उसके अंदर अपार संभावनाएँ हैं। सही जागरूकता एवं प्रयास से वह अपनी नियति गढ़ सकता है। कक्षा में अध्यापक सभी छात्रों को समान रूप से पढ़ाते हैं। क्या सभी छात्र एक जैसा सीख पाते हैं, क्या सभी एक जैसा नंबर लाते हैं? अपनी जागरूकता के स्तर के अनुसार कक्षा एवं जीवन में अपने अंदर निहित ज्ञान को हम जागृत कर सकते हैं। उपनिषद की महान शिक्षा कहती है व्यक्ति में आत्मविश्वास, आत्म श्रद्धा, आत्म नियंत्रण, आत्म निर्माण, आत्म त्याग, मानवता, सहयोग प्रेम एवं विश्व बंधुत्व भावना का विकास आवश्यक है। इन विचारों से ओतःप्रोत होने से ही चरित्र निर्माण होता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ही चरित्र निर्माण है। स्वामी जी के अनुसार – जो शिक्षा जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिये तैयार नही करती, जो समाजसेवा की भावना विकसित नही करती, जो चरित्र निर्माण नहीं करती और जो शेर जैसा साहस पैदा नहीं करती, उस शिक्षा का क्या लाभ।

हमारे आचरण का मूल आधार है शिक्षा। हमारे आचरण के अनुरूप ही हमारी मनोवृत्ति का निर्माण होता है। इसके लिये मानसिक शिक्षा के द्वारा बुद्धि का उचित विकास आवश्यक है। इसके अंतर्गत हृदय मे बंधुभाव जाग्रत हो, सेवा भाव उत्पन्न हो। नई बातें जानने की उत्सुकता के साथ निरंतर ज्ञान वृद्धि होती रहे। भले बुरे का विवेक मन मे जाग्रत रहें। शिक्षा की एक अन्यतम विधा है – आध्यात्मिक शिक्षा। हममें सम्मान एवं आदर का भाव उत्पन्न हो। समग्र जीवन के प्रति हम जागरुक बने। आंतरिक जीवन के लिये मिशाल हो। राष्ट्रीय, धार्मिक, जातीय, सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यक्तिगत मान्यताओं एवं परम्पराओं के प्रति जागरुकता विकसित हो। उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के नाम पर जो विद्यार्थियों को आज पढ़ाया जाता है, उसका प्रतिफल हमारे सामने है। हम सुस्त है, सहयोग में विश्वास नहीं करते। एक दूसरे से प्यार नहीं करते, एक दूसरे के लिये त्याग नहीं करते। ईर्ष्या, वैमनस्य के भाव से भरे रहते है। शिक्षा व्यवस्था का प्रसार हो रहा है, पर नकारात्मकता में कमी दिखाई नहीं पड़ती।

बालकों मे शुरु से ही सामाजिक भावना, दया, परोपकार, सहनशीलता, सौहार्द, सहानुभूति, अनुशासन आदि सामाजिक गुणों के विकास के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए। **दार्शनिक प्लेटो** ने कहा था – **शिक्षा का कार्य मनुष्य के शरीर और आत्मा को वह पूर्णता प्रदान करता है जिसके वह योग्य है।** शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों के रुचियों, आदतो, विचार शक्ति, सामाजिक दृष्टिकोण को विकसित किया जाना चाहिए।

शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान-कौशल मे वृद्धि तथा व्यवहार को परिमार्जित किया जा सके। इस प्रकार हम सभ्य, सुसंस्कृत, योग्य मानव विकसित कर सकते है, जिसके द्वारा आदर्श-समाज का निर्माण होगा।

आज पाठ्यक्रमों एवं पुस्तकों के बोझ से विद्यार्थी त्रस्त है। विद्यार्थियों को सूचनाओं से भर दिया जाता है। सरकारी विद्यालयो में शिक्षा के नाम पर जो कुछ हो रहा है, बहुत ही शर्मनाक है। शिक्षा में शिक्षको की प्रधान भूमिका रहती है। एक जमाना था जब आचार्यो को राजमहल में भी सर्वोच्च स्थान मिलता था। शिक्षा के नाम पर शिक्षकों की मनमानी सरकारी विद्यालयों में चिंता का विषय है। शिक्षा प्रणाली एवं व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। सन् १८३२ मे मैंकाले ने भारतीय उच्च परम्परा को नष्ट भ्रष्ट करने के उद्देश्य से नई शिक्षा व्यवस्था कायम की थी जो कि स्वतंत्रता के कई वर्षों बाद भी चल रही है। शिक्षा के द्वारा नौकरों का निर्माण करने की जगह, उच्च आदर्श युक्त चरित्र निर्माण करना होगा। देश के नागरिक जब तक आत्म विश्वास से भरे जीवन को समग्रता मे समझने की शक्ति से लैस नहीं होंगे, शिक्षा का उद्देश्य अधूरा ही रहेगा। शिक्षा के द्वारा ही हम **तमसो मा ज्योतिर्गमय** को चरितार्थ कर सकेंगे। उसी ज्योति से हमे अज्ञान से मुक्ति मिलेगी – **सा विद्या या विमुक्तये**।

शिव कुमार लोहिया

"नारी तुम वन्दनीय हो"

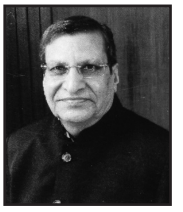

– गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया

सभी स्नेही सुधी बंधुओं का यथा योग्य अभिनंदन। प्रभु से प्रार्थना है आप सभी निरोगी, स्वस्थ, सुखी एवं संपन्न रहें।

गत माह हमने पर्व एवं त्यौहारों का सपरिवार खूब आनंद लिया। कुछ लोगों ने अपने नगर में रहकर ही एवं कुछ लोगों ने बाहरी स्थानों का भ्रमण करके इन त्यौहारों की उपयोगिता का पूरा वरन किया। अब काम में जुट जाने की बारी है।

सनातन संस्कृति में नारी का बहुत उच्च स्थान है। किसी भी युग की बात करें, मातृशक्ति का स्थान सनातन संस्कृति में सदा ऊँचा एवं सम्मानीय रहा है। अपना हजारों साल पुराना इतिहास खंगालने से इस सत्य की पुष्टि होती है। सनातन धर्म में जन्म से लकर मृत्यु पर्यंत मनुष्य कई संस्कारों से बंधा है, विवाह संस्कार उनमें से एक है। यह सभी संस्कारों में विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वैसे सभी संस्कार समय और काल के हिसाब से अपनी अलग पहचान और उपयोगिता रखते है। पशु प्रवृत्ति एवं भोग संस्कृति से बचने के लिए तथा मर्यादित जीवन शैली जीने के लिए विवाह संस्कार की परम्परा शुरु हुई। इसी संस्कार से ही गृहस्थ जीवन का शुभारम्भ होता है। "वैदिक रीति से सम्पादित पाणिग्रहण संस्कार में वर-वधु एक दूसरे को वचन देते है यानि एक दूसरे से प्रतिज्ञा करते हैं, एक दूसरे को दिए गए वचनों को गम्भीरता से लिया जाय एवं निष्ठापूर्वक पालन किया जाय तो सम्बन्ध विच्छेद तो बहुत दूर, कभी झगड़ा भी नही हो सकता।"

अब आदिकाल में चलते हैं। भगवान विष्णु की भार्या माता लक्ष्मी, भोले भंडारी शिव महादेव की अर्धांगिनी माता पार्वती तथा जग रचियता भगवान ब्रह्मा की सुसंगिनी मां सरस्वती - सभी सम्मानित एवं पूजनीय रही हैं। बराबरी की सहचरी रही हैं। आपस में कहाँ श्रेष्ठता या लघुता का विचार है। एक दूसरे के कार्यों में कही भी कोई बाधा या अड़चन नहीं हैं। नारी की पूज्यता हर युग में रही है, चाहे सतयुग हो या त्रेता या द्वापर नारी सदा पूज्य रही है। त्रेता युग मे माँ सीता का अपहरण करने से त्रिलोक विजयी रावण का अंत हुआ, द्वापर में द्रौपदी का अपमान करने पर महाभारत का युद्ध हुआ। जब सनातन संस्कृति आक्रांतित नही हुई थी तब नारी कभी भी अधिकारों के लिए संघर्षरत नही रही। मंच पर खड़े होकर अपने अधिकारों की मांग पेश करने की आवश्यकता उसे कभी प्रतीत ही नहीं हुई। धन एवं ऐश्वर्य की स्वामिनी माँ लक्ष्मी, वाणी एवं विद्या की प्रदाता माँ शारदे, शक्ति की श्रोत माँ दुर्गा की कृपा के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है। "देवमाता अनुसुइया ने अपने तपोबल से सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा, पालक श्री विष्णु एवं संहारक निर्विकार भोलेनाथ को अपने आँगन में नन्हे-नन्हे बच्चे बना दिये। सती सावित्री ने यमराज को अपने पति को पुनः जीवन दान देने के लिए मजबूर कर दिया। कलिकाल में भी राणी सती दादी की कथा से हम सब परिचित हैं। मातृशक्ति की महिमा एवं सर्वोच्चता के अनेक प्रसंग हमारे शास्त्रों में, हमारे इतिहास में भी वर्णित है" नारी मातृत्व का गौरव लेकर निर्द्वन्द भाव से अपने कर्तव्य में लीन रहती थी। वह अशिक्षित भी नही थी। वह भी पुरुषों के समकक्ष विज्ञ, विदुषी एवं पांडित्य से परिपूर्ण थी। नर की शिक्षा जहां गुरुकुल में होती थी, नारी की शिक्षा घर पर।

अतीत में कई वीरांगनाएं पांडित्य से परिपूर्ण शास्त्रार्थ करने में शास्त्रार्थी हुई है। परंतु विदेशी विधर्मी आक्रांताओं ने यहां के धर्म, संस्कृति एवं संस्कारों को आक्रांत किया। जहां पहले समाज में नारी का अलौकिक और वन्दनीय स्थान रहा है, आज उसे भोग एवं वासना की दृष्टि से देखा जा रहा है। आज वह पूज्यनीय 'स्वर्गादपि गरीयसी' ममतामयी माता के रूप में न होकर काम तृप्ति हेतु सहचरी हो रही है। आज विधर्मी संस्कृति ने हमारी सनातन संस्कृति पर भी आक्रमण किया है। इसके बावजूद सनातन संस्कृति आज भी यथावत सनातन हैं। कुछ भूले भटके लोग भौतिकवादी पाश्चात्य संस्कृति के पीछे भाग रहे हैं। यह ठीक है कि युग परिवर्तन के साथ हमारे आचार विचारों में और हमारी आवश्यकताओं में परिवर्तन होना अनिवार्य है परंतु अपनी संस्कृति के मूलभूत संस्कारो की अनदेखी कदापि स्वागत योग्य नहीं है। भार्या के बिना पुरुष कुछ नहीं कर सकता। **'एक चक्रो रथो यद्वदेकपक्षो यथा खगः। अभार्योऽपि नरस्तद्वदयोग्यः सर्वकर्मसु।।'** जैसे एक पहिए का रथ नही चल सकता और एक पांख की चिड़िया नहीं उड़ सकती वैसे ही भार्या से रहित अकेला पुरुष कोई भी कार्य नहीं कर सकता।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमंते तत्र देवताः"

(मनु ३/५६)

जिस घर में स्त्रियों की पूजा होती है वहा पर अवश्यमेव देवता रमते हैं।

हिंदु सभ्यता में दोनो के समान अधिकार होते हुए भी पति का कर्तव्य है कि सदा पत्नी को सुखी, संपन्न रखे, उसकी रक्षा करे, उसे वस्त्र आभूषण से संतुष्ट रखे और सब कार्य उसकी सम्मति से करे। बराबर उसे घर की सम्राज्ञी समझे। और पत्नी का भी कर्तव्य है कि पति को सदा प्रसन्न रखे और प्राणपण से उसकी सेवा करे।

अधिकार और कर्तव्य साथ साथ चलते हैं। बिना कर्तव्यों का पालन किए अधिकारों की मांग बेमानी है। हमें इसमें सामंजस्य बनाये रखना है, इसी की अनदेखी की वज़ह से आज संबंध विच्छेद भी बहुत होते हैं। कुछ पुरुषों की तामस प्रवृत्ति भी इसका कारण बनती है। नारी जहां वन्दनीय है वही पर सरस्वती विराजती है, लक्ष्मी वास करती है तथा शक्ति का बाहुल्य रहता है। हमें गर्व है अपनी सनातन संस्कृति पर। यह सदा सनातन व चिरंजीवी रहे। हमें वह संस्कार अगली पीढ़ी को समझाने होंगे। केवल उदाहरण देने से काम नहीं चलेगा हमें स्वयं उदाहरण बनना होगा।

जय समाज जय राष्ट्र।

बहुत बड़ी चिन्ता का कारण बनता जा रहा है समाज में निरन्तर आ रही संस्कारों में गिरावट – गाड़ोदिया

समाज में निरन्तर संस्कारों में आ रही गिरावट बहुत बड़ी चिन्ता का कारण बनता जा रहा है क्योंकि इसी वजह में अन्य बुराईयां पनप रही हैं। एक तरफ से लड़के-लड़कियों का निश्चित उम्र में विवाह नहीं हो रहा है और हो भी रहा है तो दिन पर दिन तलाक के मामले बढ़ते जा रहे हैं। सहनशीलता की जगह इगो ने ले ली है। सम्बन्धों को तोड़ना खिलौने की भांति हो गया है। विवाह के पश्चात लड़की के साथ माँ का फोन पर अत्यधिक वार्तालाप तथा पीहर वालों का हस्तक्षेप इसके पीछे का मूल कारण बनता जा रहा है। लड़कियां भी अब शिक्षित हैं। अब दहेज के लिए अत्याचार जैसी बातें नगण्य हो गई हैं। बस जरुरत है आपसी समझ के साथ आगे बढ़ने की। इसके लिए अधिकाधिक संख्या मे युवा वर्ग को साथ लेकर गोष्ठियां तथा सेमिनार के आयोजन की जरूरत है। उक्त

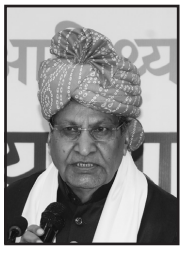

बातें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सुन्दर आतिथ्य में गुवाहाटी के होटल विश्वरतन में आयोजित सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक अखिल भारतीय समिति की बैठक में कही। उन्होने कहा कि पूरे देश में समाज सेवा के क्षेत्र में हमारे समाज की पहचान है, संस्कारों के बल पर समाज सुधार की प्रक्रिया को जारी रखना बहुत जरुरी है। इसके पूर्व उन्होंने दीप प्रज्ज्वलित कर बैठक का शुभारंभ किया।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका ने बैठक की शुरुआत करते हुए विगत कार्यकलापों की जानकारी सबके समक्ष रखी, साथ ही उन्होंने सम्मेलन की एकल सदस्यता, सदस्यता राशि सहित अन्य माननीय सदस्यों की कई जिज्ञासाओं का शमन दिया।

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ ने कहा कि एकल सदस्यता के बाद सम्मेलन का जो राष्ट्रीय स्वरूप दिन-पर दिन उभरकर सामने आ रहा है, वह फख्र की बात है। उन्होंने कहा कि समाज में बहुत जल्दी-जल्दी विकृतियां आ रही हैं, संस्कार-संस्कृति की शिक्षा के जरिए ही इस पर रोकथाम संभव है।

बैठक में राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण डॉ. श्याम सुन्दर हरलालका (गुवाहाटी), श्री भानीराम सुरेका (कोलकाता) तथा श्री पवन गोयनका (दिल्ली) सहित राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री गोपाल अग्रवाल, पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री कैलाश पति तोदी, पूर्व प्रादेशिक अध्यक्ष श्री मधुसूदन सिकरिया, प्रादेशिक महामंत्री श्री अशोक अग्रवाल, प्रादेशिक उपाध्यक्ष श्री अशोक अग्रवाल, गुवाहाटी महिला शाखा की अध्यक्षा श्रीमती कंचन केजरीवाल, बेंगलुरु से आये श्री सीताराम अग्रवाल, कोलकाता के श्री रतन अग्रवाल, श्री कृष्ण कुमार जालान, राजकुमार तिवाड़ी सहित सर्वश्री माणक लाल दमानी, सुशील कुमार गोयल, प्रदीप भुवालका, सांवरमल अग्रवाल, सम्पत मिश्र, सज्जन शर्मा, अरुण अग्रवाल, विवेक सांगानेरिया, सुरेश कुमार बजाज, ललीत कुमार कोठारी, अनिल शर्मा, राजेश बिरमीवाल, रोशन लाल भारद्वाज, रुपचांद करनानी, अशोक नागैरी, भैरो कुमार शर्मा, कैलाश काबरा, राजेश पाटोदिया, विकाश खण्डेलवाल, प्रदीप अग्रवाल, दिनेश गुप्ता, निरंजन सीकरिया, सर्वश्रीमती सीताजी हरलालका, उर्मिला

दिनोदिया, सुषमा लाखोटिया, स्वाति मुँधड़ा, सरोज जालान, सुजाता मोर, सीमा अग्रवाल एवं अन्य सदस्यों ने समाज की ज्वलंत समस्याओं एवं विभिन्न मुद्दों पर अपनें - अपनें विचार रखे जिस पर गहन मंथन हुआ, साथ ही संगठन को मजबूत करने की दिशा में गहन चिंतन किया गया। राष्ट्रीय अध्य श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने बताया कि गत राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में पारित प्रस्ताव 'संरक्षक सदस्यों द्वारा विशिष्ट संरक्षक सदस्य के बीच की राशि का अंतर (रु. ५१००० – रु. २१००० = रु. ३००००) का भुगतान कर संरक्षक सदस्य से विशिष्ट संरक्षक सदस्य के रूप में मान्यता' दी जा सके। इस विषय पर विचार–विमर्श के बाद सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि सम्मेलन के वे सदस्य जिनका नाम केन्द्रीय कार्यालय की सूची में संरक्षक सदस्य के रूप में अंकित है, रु. ३०००० का भुगतान कर, विशिष्ट संरक्षक सदस्य बन सकते हैं। यह भी निर्णय लिया गया कि यह सुविधा वर्तमान वित्तीय वर्ष के अंत (३१ मार्च २०२३) तक ही ली जा सकेंगी। और इसके तहत प्राप्त सदस्यता शूल्क पर, संविधान के प्रावधानों के अनुसार, केन्द्रीय सम्मेलन का अधिकार होगा।

विगत कई सालों से बिघटित मध्य प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन को नए सिरे से पुनर्गठित करने का भार सर्वसम्मति से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन गोयनका जी को दिया गया।

कोलकाता से पधारे सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तथा विधायक श्री विवेक गुप्ता ने कहा कि हम युवा पीढ़ी के लिए रोल मॉडल नहीं बन पा रहे हैं, समस्याएं सभी जगह हैं, उन्हें ठीक करने के लिए सही तरीके का चयन जरूरी है। उन्होंने समाज के लोगों को सक्रिय राजनीति में आने का आह्वान करते हुए कहा कि हमें अपने फॉलोवर तैयार करने होंगें क्योंकि राजनैतिक पार्टियों को सिर्फ उसी से मतलब है, जो जीतकर आ सकता है।

बैठक के शुभारंभ में पूर्वोत्तर के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल ने सभी का स्वागत किया। महिला शाखा की सदस्याओं ने **'म्हारे हिवड़े हर्ष अपार, कांई मनुवार करां'** स्वागत गीत से सभी का मन मोह लिया।

बैठक में युवा साथी श्री दिनेश गुप्ता की कर्मठता तथा तत्परता के साथ कार्य की सराहना की गई।

पूर्वोत्तर प्रांत की सिलपथार, डिब्रूगढ़, तिनसुकिया, लखीमपुर, नगांव, खारुपेटिया, बरपेटा रोड, गंगापाड़ा सहित गुवाहाटी, कामरूप एवं महिला शाखा के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका ने दिया।

दो दिवसीय इस गुवाहाटी प्रवास के दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष ने नेतृत्य में राष्ट्रीय-प्रांतीय प्रतिनिधि मण्डल ने असम से समाज के एकमात्र मंत्री श्री अशोक सिंघल से उनके आवास पर जाकर मुलाकात की साथ ही जम्मु-कश्मीर के डीजीपी (जेल) की विगत दिनों हुई नृशंस हत्या के मद्देनजर उनके घर जाकर घटना पर गहरा खेद जताया तथा दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि दी। दिवंगत के बड़े भाई श्री प्रेम कुमार लोहिया ने इस बात पर दुःख प्रकट किया कि सरकारी स्तर पर इस हत्याकाण्ड की ठीक तरीके में जांच होनी चाहिए तथा हत्या के कारणों का खुलासा होना चाहिए, जो अभी तक नहीं हुआ।

रपट

कागज और कलम इस दुनिया में सबसे अच्छे साथी; वे न कोई शिकायत करते हैं, और न ही कोई माँग : सीताराम शर्मा

"लेखक–पत्रकार, कूटनीतिज्ञ, व्यवसायी, राजनीतिक समीक्षक, समाजचिंतक – आदि कितने ही क्षेत्रों के अनुभवों को समेटे श्री सीताराम शर्मा आज कार्यक्रम में हमारे बीच उपस्थित हैं। इनके अनुभवों का संसार, जितना विशाल है, उतना ही विस्तृत। अपने अन्य सभी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए, एक चिंतक सदैव इनके अन्दर जागृत रहा है। राहुल की तरह घुमक्कड़ भ्रमण में इनकी बराबर रुचि रही। देश-दुनिया का भ्रमण करते हुए, इन्होंने सम्बन्धित विषयों पर अपना लेखन निरंतर जारी रखा।" ये वक्तव्य है **हिन्दी विश्वविद्यालय, कोलकाता के उप-कुलपति प्रो. दामोदर मिश्र** के जो उन्होंने श्री सीताराम शर्मा की नयी पुस्तक **'मेरी कलम, मेरे पन्ने'** का विमोचन करते हुए व्यक्त किये।

श्री मिश्र ने कहा कि हालाँकि सीताराम जी का कभी किसी राजनीतिक दल से सम्बंध नहीं रहा, लेकिन अपने सामाजिक–राजनीतिक जीवन एवं पत्रकारिता की वजह से इनका सभी राजनीतिक दलों एवं राजनयिकों के साथ सम्पर्क रहा। कहते है कि राजनीतिक रूप से सक्रिय रहकर ही आप समाज की समस्याओं को परिपक्व रूप में देख पाते हैं और उनका निवारण कर पाते हैं। इनका यही अनुभव और सक्रियता इन्हें कलकत्ता के अनगिनत सामाजिक संस्थाओं के शीर्षस्थ पदों तक लेकर गया। ये ७६ वर्ष के एक युवा लेखक है। मैं समाज के कल्याण हेतु इनके स्वस्थ रहने की कामना करता हूँ।

पुस्तक का विमोचन गत १ नवम्बर, २०२२ को बीबीडी बाग पूर्व, कोलकाता स्थित पश्चिमबंग हिन्दी अकादमी (सूचना एवं संस्कृति मंत्रालय, पश्चिमबंग सरकार) में अकादमी के चेयरमैन श्री विवेक गुप्त की अध्यक्षता में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए चेयरमैन श्री विवेक गुप्त ने सभी अतिथियों को अंगवस्त्र व साफा पहनाकर स्वागत किया। तत्पश्चात् अकादमी की ओर से सभी अतिथियों को हिन्दी साहित्य कोष की एक-एक प्रति भेंट की गयी। **श्री विवेक गुप्त** ने अपने वक्तव्य में कहा कि पश्चिम बंगाल में हिन्दी की जितनी सेवा सीताराम जी ने की है, मेरी समझ में शायद किसी और ने नहीं की होगी। बंगाल में अब हिन्दी को वो सम्मान प्राप्त हो रहा हैं, जिसका वो हकदार है। पश्चिमबंग हिन्दी अकादमी और हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी ने इसकी शुरूआत कर दी है और आगे भी ये सिलसिला जारी रहेगा।

अपने सम्बोधन में लेखक **श्री सीताराम शर्मा** ने कहा कि जिंदगी के कई अहम और निर्णायक मोड़ जिंदगी को बदलने वाले क्षण बन जाते हैं। पत्रकारिता से जुड़ना मेरी जिंदगी को बदलने वाला क्षण साबित हुआ। और यही जीवन बदल देने वाला लम्हा बन गया। १९६४ में हम मित्रों ने मिल कर हिन्दी पाक्षिक 'विचार प्रवाह' का प्रकाशन आरम्भ किया। मेरी उम्र केवल १६ वर्ष थी। मुझे कलम पकड़ा दी गयी और उप-संपादक बना दिया गया। और यहीं से आरम्भ हुआ **'मेरी कलम, मेरे पन्ने'** की यात्रा।

लेखन ने मेरा जीवन की सच्चाई से परिचय करवाया है। प्रेरणास्रोत है लेखन – जो मनुष्य के अन्दर की कल्पना और विचारों को शब्द प्रदान करता हैं। लेखन हमारे जीवन का वो हिस्सा है जो हमें अपने विचारों और भावनाओं को सही तरीके से व्यक्त करने का मौका प्रदान करता है। इसका कोरोनाकाल में मुझे सीधा अनुभव हुआ जब मैं घर में बन्द था और मैंने २५० पृष्ठों की आत्मकथा लिख डाली।

शेशांष पृष्ठ नं. १३

दीपावली प्रीति मिलन

दीपावली प्रीति मिलन पर बोले सज्जन भजनका

एक मंच पर आना चाहिए मारवाड़ी सम्मेलन, युवा मंच तथा महिला सम्मेलन को

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा बालीगंज में आयोजित दीपावली प्रीति मिलन के अवसर पर अपना शुभकामना संदेश देते हुए मुख्य अतिथि श्री सज्जन भजनका ने खुद को पुराना सम्मेलनिष्ठ बताया। उन्होंने कहा कि मैं ५४ साल पहले सम्मेलन से जुड़ा था। उस वक्त में स्कूल का छात्र था। वीलंटियर के रूप में कार्यक्रम में शामिल होता था। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन तथा मारवाड़ी युवा मंच को शनैः-शनैः एक साथ आकर सेवा के कार्मों को हाथ में लेना चाहिए। सम्मेलन, युवा मंच तथा महिला सम्मेलन, सभी समाज के अंग हैं।

विशिष्ट अतिथि श्री महावीर प्रसाद जालान ने सभी उपस्थित अतिथिगन व श्रोताओं को दीपावली की शुभकामनाएँ दी।

सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने कहा कि सबरी की कथा सब सूनता है पर सबरी की व्यथा कोई नहीं सुनता। सम्मेलन समाज के प्रत्येक व्यक्ति की व्यथा सुनता है और उनके पास हमेशा खड़ा होता हैं।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष पद्मश्री श्री प्रह्लाद राय अगरवाला ने कहा कि अब अमेरिका व लंदन में भी दीवाली मनायी जा रही हैं। दीवाली खुशी का त्यौहार है। आप भी खुशिया बांटियें, यह तभी संभव है जब आप अपने से कमजोर का हाथ थामेंगे। उनकी जरुरतें, उनकी असुविधायें को समझोंगे और दूर करेंगे।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष रामअवतार पोद्दार ने कहा कि दीपावली मिलन का त्यौहार है। हमें मिल कर समाज की कुरीतियों को दूर करना चाहिए। निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ ने कहा कि हमें आज के असुरों पर विजय पाना होगा। सम्मेलन का काम है समाज सुधार, हम इस पर निरंतर चलते रहेंगे, साथ ही हमारे समाज की पहचान सेवा कार्यों में भी जुड़ना होगा।

पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री रतन शाह ने कहा कि देश में ९५ प्रतिशत प्रतिभा दबी हुई है। क्योंकि उनकी अपनी भाषा में पढ़ाई नहीं होती। अगर किसी की भाषा मर जाती है तो उसकी साहित्य व संस्कृति मर जाती है। पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री शिव कुमार लोहिया ने कविता दीवाली की दीप जलाओं का पाठ कर दिपावली की शुभकामनाएँ दी।

श्री आनन्द अग्रवाल ने कहा कि हमें दीपावली पर किसी भी प्रकार का आपसी मनमुटाव भुलाकर समाजहित में कार्य करना चाहिए। इससे पहले दीपावली प्रीति मिलन समारोह का उद्घाट न अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। श्रीमती सुनीता लोहिया ने गणेश वंदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

अतिथियों का स्वागत राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्रीद्वय सुदेश अग्रवाल तथा श्री गोपाल अग्रवाल, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री दामोदर प्रसाद बितावतका, प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्षगण श्री विजय गुजरवासिया, श्री विजय डोकानिया तथा श्री नन्दकिशोर अग्रवाल ने दुपट्टा, पगड़ी पहना कर किया।

कार्यक्रम का सफल संचालन राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका ने किया। धन्यवाद ज्ञापन राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री गोपाल अग्रवाल ने किया।

कार्यक्रम में भारी संख्या में समाज के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

COMPLETE ELECTRICAL SOLUTION
ELECTRICAL WIRES
FANS AND LIGHTS
LT PANEL, CABLE TRAY AND TRANSFORMER
WE MANUFACTURE
POWER TRANSFORMER
DISTRIBUTION TRANSFORMER
LT ELECTRICAL PANEL
PERFORATED CABLE TRAY
LADDER-TYPE CABLE TRAY
GARODIA ENTERPRISES
AARNAV POWERTECH
MARKET ROAD EAST, UPPER BAZAR
RANCHI - 834 001, JHARKHAND
www.aarnavpowertech.com
garodia@garodiagroup.com
0651-2205996

इतना ही नहीं, जब भी मुझे प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, मेरा अनुभव है कि लेखन के माध्यम से – क्या सही हैं, क्या गलत है – इसका जवाब मिलता है। लेखन एक ऐसी किया है जो आपको आपकी शख्सियत से अवगत कराता है। कलम और कागज इस दुनिया में सबसे अच्छे साथी होते है, वे न तो कोई शिकायत करते हैं, और न ही कोई माँगे।

इस अवसर पर आमंत्रित वक्ताओं में डॉ. राजेश कुमार (आईपीएस), सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री हरिमोहन बांगड़ एवं डॉ. बाबूलाल शर्मा उपस्थित थे।

आईपीएस अधिकारी **डॉ. राजेश कुमार** ने अपने वक्तव्य में कहा कि सीताराम जी के विषय में बोलने के लिये आयोजकों द्वारा आवंटित तीन मिनट काफी नहीं हैं। बहुआयामी प्रतिभा के धनी श्री सीताराम शर्मा ने अनेकों संस्थाओं में महत्वपूर्ण व गरिमामयी पदों पर रहते हुये अपनी महती भूमिका निभाई है। २०१३-१४ में भारत की संस्कृति मंत्री श्रीमती चन्द्रेश कुमारी कटोच के विशेष कार्याधिकारी रहते हुए अपनी यादों को साझा करते हुए उन्होंने बताया कि कैसे सीताराम जी से मिलने के उपरांत केन्द्रीय मंत्री महोदय इतनी प्रभावित हुयीं कि कोलकाता स्थित मौलाना अबुल कलाम आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज 'मकाईज' में चेयरमैन के पद को स्वीकार करने हेतु उनसे अनुरोध करने को कहा। मेरे अनुभव के विपरीत, जहाँ एक और सरकारी पदों के लिये सिफारिसों का अंबार लगा होता था, हमलोग सीताराम जी से चेयरमैन पद को स्वीकार करने का अनुरोध कर रहे थे। उन्होंने बताया कि सीताराम जी एक बार जिस काम की जिम्मेदारी ले लेते हैं, उत्तम पुरुष की भाँति वे सभी विघ्न-बाधाओं को पार करते हुये उसे सफलता की ओर उन्मुख करते हैं।

सुप्रसिद्ध उद्योगपति **श्री हरिमोहन बांगड़** ने सभी सरस्वती -पुत्रों का अभिवादन करते हुए कहा कि समय के साथ प्राय: लोगों के विचार बदल जाया करते हैं, परन्तु सीतारामजी की यही विशिष्टता है कि उनके मूल-विचार हमेशा एक जैसे बनें रहें। अपनी बातों को बेबाक तरीके से रखना इनकी खूबी है। उन्होंने कहा कि सरस्वती के बिना लक्ष्मी भी नहीं आती। माँ लक्ष्मी का वहीं वास होता है, जहाँ माँ सरस्वती मौजूद हो। उन्होंने आशा जतायी कि सीताराम जी यूँ ही बेबाकी एवं ईमानदारी पूर्वक साफगोई से लिखतें रहेंगे और समाज प्रेरणा–स्वरूप इनसे लाभान्वित होता रहेगा। मुझे आपकी सरल और आम आदमी की भाषा बहुत प्रभावित करती है।

भारतीय विद्या मन्दिर की द्वैमासिक पत्रिका 'वैचारिकी' के संपादक **डॉ. बाबूलाल शर्मा** ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज का दिन मेरे लिये बहुत महत्वपूर्ण है। कलकत्ता में 'चौकड़ी' के नाम से प्रख्यात, ग्रुप के चौथे स्तम्भ श्री सीताराम शर्मा जी से आज मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कलकत्ता साहित्य–जगत के सबसे महत्वपूर्ण नामों में से एक हैं सीताराम शर्मा। सामाजिक, राजनीतिक, अन्तर्राष्ट्रीय, यहाँ तक कि आर्थिक – हर विषय पर इनकी कलम खूब चलती है। इन्होंने पत्रकारिता एवं लेखन को अपने व्यवसाय से अधिक महत्व दिया।

हाल ही में प्रकाशित इनकी आत्मकथा **'जीवन के मोड़'** में बड़ी ईमानदारी से इन्होंने लिखा है, "मैं अपने बारे में एकदम स्पष्ट नहीं बन पाया हूँ। जीवन की पूरी सच्चाई भी नहीं रख पाया हूँ, हालाँकि नाकारात्मक पहलुओं को उजागर करने से परहेज नहीं किया है। सच छिपाया भले ही हो लेकिन जो लिखा है वह सच के सिवा कुछ नहीं है। अगर सब कुछ बेबाकी और स्पष्ट रूप से कहने की हिम्मत जुटा पाया तो कभी 'पूरा सच' भी लिखने की इच्छा है।" मेरी हार्दिक कामना है कि ये अपना 'पूरा सच' भी जरूर लिखें – बाबूलाल जी ने आशा व्यक्ति की।

धन्यवाद-ज्ञापन करते हुए हिन्दी अकादमी की ओर से **श्री रावेल पुष्प** ने अकादमी द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी और कहा कि पश्चिम बंग हिन्दी अकादमी द्वारा आयोजित पुस्तक विमोचन का यह प्रथम कार्यक्रम है। उन्होंने सभी उपस्थितों का आभार प्रकट करते हुए आशा व्यक्त की कि आगे विचार-गोष्ठियाँ, साहित्यिक चर्चा आदि का बराबर आयोजन किया जायेगा। कार्यक्रम का संचालन **मशहूर रेडियो जोंकी आरजे राकेश** द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में सर्वश्री जुगल किशोर सर्राफ, संतोष सराफ, शिव कुमार लोहिया, कैलाशपति तोदी, के. के. सिंघानिया, अमित सरावगी, विजय बाधवा, अशोक झा, दीनदयाल घनानिया, अरुण भल्लावत, नवल राजगड़िया, किशन किला, वेदप्रकाश जोशी, सिद्धान्त जोशी, पत्रकार अनवर हुसैन सहित समाज के कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय गान के साथ हुआ।

समाचार सार

बधाई

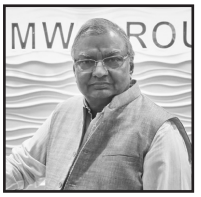

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष और अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति 'श्री विजय कुमार किशोरपुरिया जी को दिल्ली में रुस की यूनिवर्सिटी के द्वारा समाज सेवा के क्षेत्र में डॉक्टरेट की उपाधि और स्वर्ण पदक प्रदान किया गया है।' साथ ही इनकी कंपनी बीएमडब्ल्यू वेंचर्स लिमिटेड को भी दुबई में तीन सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार मिले हैं। हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ!

उत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री श्रीगोपाल तुलस्यान के अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार कोलकाता आगमन पर राष्ट्रीय कार्यालय में स्वागत करते राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका एवं राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री गोपाल अग्रवाल।

मारवाड़ी सम्मेलन की प्रांतीय गायन व नृत्य प्रतियोगिता

जोरहाट शाखा ने प्रतिभा खोज के लिए लिया ऑडिशन, नौ प्रतियोगियों को मिला गुवाहाटी का टिकट

मारवाड़ी सम्मेलन की जोरहाट शाखा ने प्रांतीय नृत्य व गायन प्रतियोगिया **एक खोज प्रतिभा की सीजन २** के लिए ६ नवम्बर २०२२ को जोरहाट ऑडिशन राउंड का आयोजन किया। अपर असम चैंबर ऑफ कॉमर्स सभागार में आयोजित इस ऑडिशन में कुल २७ प्रतियोगियों ने हिस्सा लेते हुए एक से एक बढ़ कर एक प्रस्तुति दी। ऑडिशन की इस प्रक्रिया ने यहां जोरहाट के अलावा टियोक और शिवसागर से भी प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया। नृत्य प्रतियोगिता के जूनियर वर्ग में गरिमा अग्रवाल को प्रथम और प्रथम जैन को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। वहीं सीनियर वर्ग में वंशिता सोमानी ने प्रथम और टियोक की चांदनी कुवास ने द्वितीय स्थान हासिल किया। गायन प्रतियोगिता के सीनियर वर्ग में किशन शर्मा को प्रथम और युविका बागड़ी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वहीं जूनियर वर्ग में पार्थ लाहोटी ने प्रथम तथा मानवी शर्मा व सेवल जैन ने संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान हासिल किया। दूसरे स्थान के मानवी व सेजल के बीच मुकाबला बराबरी का था और निर्णायकों ने दोनों को गुवाहाटी का टिकट थमया नृत्य के लिए नेहा बागड़ी बैद और पूजा माहेश्वरी तथा गायन के क्षेत्र में विक्रांत जोशी और मोहित जाजू ने निर्णायक की भूमिका निभाई। कार्यक्रम संयोजक सरिता दुग्गड़ और सीए रमेश राठी ने ऑडिशन की इस प्रक्रिया को भी एक इवेंट बना दिया। इससे पहले शाखा अध्यक्ष अनिल केजरीवाल ने सभी आगंतुकों का स्वागत कर कार्यक्रम की शुरुआत की। वहीं मंत्री नागर रतावा ने समापन पर धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया। राष्ट्र गान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। निर्णय सुनाने से पहले गायक विक्रांत जोशी और मोहित जाजू ने गणेश वंदना के स्वर के साथ कार्यक्रम का आगाज किया। कार्यक्रम के दौरान शाखा के राजेन्द्र पारीक, राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल, रतनलाल भंसाली, चंचल कुंडलिया और कन्हैयालाल हरलालका सहित कई सदस्य मौजुद थे। वहीं पार्षद निशा अग्रवाल और पूर्व पार्षद अंकुर गुप्ता ने भी पूरे कार्यक्रम में उपस्थित रहकर सभी का मनोबल बढ़ाया। दीपावली मिलन समारोह के दौरान अनुपस्थित रहे अंशुल शर्मा को भी असम पुलिस सेवा में चयनित होने पर स्मृति चिन्ह व फुलाम गमछा प्रदान कर कार्यक्रम में उनका अधिनंदन किया गया। मालूम हो कि एक खोज प्रतिभा की सीजन २ मारवाड़ी सम्मेलन की कामरूप शाखा का स्थाई प्रकल्प है। जोरहाट से चुने गए सभी नौ प्रतियोगी अब आगामी १३ नवंबर की गुवाहाटी में आयोजित होने वाले क्वार्टर फाइनल में भाग लेकर यहां फाइनल मुकाबलों के लिए अपनी दावेदारी पेश करेंगे। मारवाड़ी सम्मेलन की जोरहाट शाखा के अध्यक्ष अनिल केजरीवाल ने चुने गए सभी प्रतियोगियों को बधाई देते हुए गुवाहाटी में बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद की है।

समाचार सार

जम्मु-कश्मीर के DGP (जेल) श्री हेमन्त कुमार लोहिया की हत्या विगत ३ अक्टूबर २०२२ को की गई थी। आज गुवाहाटी में स्व. लोहिया के बड़े भाई श्री प्रेम कुमार लोहिया से राष्ट्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में मुलाकात की गई। उन्होंने इस हत्या के कारणों की जांच की मांग की।

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष एवं महामंत्री का शाखाओं का दौरा

शिलापथर एवम् शिलापथर महिला शाखा के आतिथ्य में प्रांतीय अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश जी खंडेलवाल एवम् महामंत्री श्री अशोक जी अग्रवाल का सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर इन दोनों के अतिरिक्त मंडलीय उपाध्यक्ष श्री छतर सिंह गिरिया सहायक मंत्री श्री दुर्गा दत्त राठी, साहित्य सृजन समिति के चेयरमैन श्री उमेश खंडेलिया शिलापथर शाखा के अध्यक्ष पवन जैन, शिलापथर महिला शाखा अध्यक्षा श्रीमती स्वाति मूंधरा एवम् शाखा के सलाहकार श्री कमल जैन मंचासिन थे।

छोटी सी गुड़िया हिमांशी सेठिया द्वारा गणेश वंदना के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

स्वागत गीत श्रीमती रत्ना देवी तोषनीवाल एवम् श्रीमती सुषमा दुग्गड़ ने प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का सुंदर संचालन श्रीमती मधु जैन ने किया।

उल्लेखनीय है कि शिलापथर महिला शाखा का गठन भी आज ही के दिन ३ वर्ष पहले हुआ था।

कार्यक्रम में सभी मंचासीन पदाधिकारियों ने सभा को संबोधित किया।

आज दौरे का दूसरा पड़ाव बिहुपुरिया नारायणपुर शाखा में था। सभा यहां के शिव मंदिर में आयोजित की गई। इस शाखा की विशेषता है कि शाखा के शत प्रतिशत सदस्य आजीवन है। मारवाड़ी समाज के ३५-४० परिवारों वाले इस गांव की शाखा में २५ सदस्य होना और वी भी सारे के सारे आजीवन होना। ये वास्तव में काबिले तारीफ है।

और उससे भी ज्यादा बड़ी बात यह है कि २५ में से २३ सदस्य आज की सभा में उपस्थित थे।

सभा सदस्यों ने प्रांतीय पदाधिकदारियों के साथ अपने विचार, अपनी समस्याए साझा की।

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष एवम् महामंत्री के मंडल (ग) के दौरे की शुरुआत नॉर्थ लखीमपुर एवम् नॉर्थ लखीमपुर महिला शाखा से हुई।

सभा श्री सीताराम ठाकुरबाड़ी के प्रांगण में आयोजित की गई जिसमें करीब ५०-६० व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

प्रांतीय अध्यक्ष ने सदस्यों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए।

सभा सफलता पूर्वक संपन्न हुई।

बिहुपुरिया नारायणपुर शाखा में सभा वहां के शिव मंदिर में आयोजित की गई।

इस शाखा की विशेषता है कि शाखा के शत प्रतिशत सदस्य आजीवन है। मारवाड़ी समाज के ३५-४० परिवारों वाले इस गांव की शाखा में २५ सदस्य होना और वो भी सारे के सारे आजीवन होना। ये वास्तव में काबिले तारीफ है। और उससे भी ज्यादा बड़ी बात यह है कि २५ में से २३ सदस्य आज की सभा में उपस्थित थे।

सभा सदस्यों ने प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ अपने विचार, अपनी समस्याएं साझा की।

बन्दरदेवा महिला शाखा का गठन

आज दौरे का अंतिम पड़ाव बन्दरदेवा शाखा में रहा। शाखा में ३१ आजीवन सदस्य हैं जबकि मजे की बात है कि कुल मारवाड़ी समाज के परिवार ही २० है। और एक आश्चर्य तब हुआ जबकि कार्यक्रम के दौरान उन्होंने बन्दरदेवा महिला शाखा की घोषणा की।

महिला शाखा का आज शपथ ग्रहण समारोह भी कराया गया।

इस अवसर पर शाखाओं ने दीवाली मिलन समारोह का भी आयोजन किया।

कुल मिलाकर आज का कार्यक्रम बहुत ही अच्छा हुआ।

महिला शाखा की अध्यक्ष श्रीमती माया सराफ तथा मंत्री श्रीमती ममता पारीक ने अपनी पूरी टीम के साथ शपथ ग्रहण किया।

(मंडल ग) के लिये कल का दिन एक सुनहरा दिन था जबकि बन्दरदेवा में प्रांतीय अध्यक्ष एवम महामंत्री के दौरे के दौरान एक नई महिला शाखा का गठन हुआ।

यह (मंडल ग) की चौथी महिला शाखा है। इसके अलावा किसी भी मंजल में इतनी महिला शाखा नहीं है।

शाखा अध्यक्षा श्रीमती माया सराफ को प्रांतीय अध्यक्ष, शाखा मंत्री श्रीमती ममता पारीक एवम शाखा पदाधिकारियों को प्रांतीय महामंत्री, कार्यकारणी सदस्यों को मंडलीय उपाध्यक्ष एवं सदस्यों को स्वयं नव निर्वाचित अध्यक्ष ने शपथ दिलाई।

शपथ ग्रहण समारोह में प्रांतीय पदाधिकारियों के अलावा बन्दरदेवा, नाहरतगुन, बिहुपुरिया, नारायणपुर, लखीमपुर महिला शाखा सहित चार शाखाओं के अध्यक्ष मंच पर अतिथि स्वरूप विराजमान थे।

इस शाखा के गठन में सराहनीय भूमिका निर्वहन हेतु मंडलीय उपाध्यक्ष श्री छतर सिंह गिरिया सहायक मंत्री श्री दुर्गा दत्त राठी एवं बन्दरदेवा शाखा का प्रान्त की ओर से आभार।

मारवाड़ी सम्मेलन पानीतोला शाखा का दीपावली मिलन समारोह संपन्न

२८ अक्टूबर २०२२ (शुक्रवार) को मारवाड़ी सम्मेलन पानीतोला शाखा ने बहुत ही व्यवस्थित तरीके से दीपावली मिलन समारोह का आयोजन किया। इस आयोजन की खासियत यह थी कि नजदीक के छोटी-छोटी जगह से भी समाज के लोगों को आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथी प्रांतीय उपाध्यक्ष मंडल (क) सुरेंद्र अग्रवाल एवं विशिष्ट अतिथि प्रांतीय सचिव मंडल (क) पवन केजरीवाल द्वारा दीप प्रज्वलित कर इस कार्यक्रम की शुरुआत की गई। जिसमे उनका साथ शाखा के अध्यक्ष प्रमोद कसेरा एवं शाखा सचिव प्रदीप अग्रवाल ने दिया। दीप प्रज्वलन के पश्चात गणेश वंदना के साथ कार्यक्रम की आगे बढ़ाया गया। समारोह में समाज के अनेक बच्चों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। समारोह का मुख्य आकर्षण एक बच्ची द्वारा रोलर स्केटिंग पर बिहू नृत्य रहा। यह बच्ची रोलर स्केटिंग डांस में एशिया चैंपियन रह चुकी है और आगे वर्ल्ड चैंपियनशिप के लिए फिनलैंड जा रही है। जो कि पानीतोला के साथ-साथ पूरे असम के लिए बहुत ही गर्व की बात है। कार्यक्रम के मध्य में प्रमोद कसेरा की धर्मपत्नी राजकुमारी कसेरा द्वारा संकलित एवं रचित किताब परशुराम एक सुहाना सफर का विमोचन प्रांतीय उपाध्यक्ष मंडल (क) सुरेंद्र अग्रवाल के द्वारा किया गया। किताब में कसेरा परिवार का असम में योगदान एवं मारवाड़ी समाज के रीति-रिवाजों का विस्तार में उल्लेख किया गया है। जिसकी आज के समय में अत्यधिक आवश्यकता थी। कसेरा परिवार १८६० में पानीतोला आकर बसा और १८७४ में अल्प समय में ही पन्नालाल-चुन्नीलाल के नाम से विशाल व्यापारिक साम्राज्य को स्थापित किया। उस जमाने में उन्होंने अपनी दूरदर्शिता से उस समय की मांग को देखते हुए अनेक कंपनियों की एजेंसी लेकर इस क्षेत्र को आगे बढ़ाने में सहयोग दिया। उनके पुत्र परशुराम कसेरा ने परिवारिक विरासत को आगे विस्तार किया। १९२० में पानीतोला क्लब की स्थापना के समय में उन्हें सदस्यता प्रदान कर सम्मानित किया गया। समाज ने पितामह के रूप में सम्मान दिया। इस कार्यक्रम मे पवन केजरीवाल ने समाज बंधुओं को संबोधित करते हुए मारवाड़ी भाषा मारवाड़ी रीति-रिवाजों को अपनाने पर जोर दिया।

बधाई !

हाल ही में हमारे रोजगार समिति के चेयरमैन श्री दिनेश कुमार जी पाटनी को महानायक श्री अमिताभ बच्चन जी के साथ मुलाकात किया। श्री बच्चन ने अपनी व्यस्तता के बावजूद पाटनी जी एवं उनके भाई श्री सर्वेश जी पाटनी को कौन बनेगा करोड़पति के सेट पर मिलने का सुनहरा मौका दिया। इस अवसर पर अमिताभ जी ने दिनेश जी की नयी किताब – अनेकांतवाद : एक विमर्श का विमोचन किया। हम अपने पाठकों को यह याद दिलाना चाहते हैं। दिनेश जी की पहली किताब – चाँद से गुफ्तगू का विमोचन भी अमिताभ जी के ही हाथों २०१२ में हुआ था। चाँद से गुफ्तगू खूबसूरत कविताओं का एक संग्रह है।

दिनेश जी ने अमिताभ बच्चन जी को उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य पर चाँद से गुफ्तगू की एक प्रति के साथ उपहार स्वरूप दी चांदी के फ्रेम में मढ़ी हुई अमिताभ जी पर लिखी एक मनोहर कविता।

श्री दिनेश जी पाटनी को अनेक अनेक शुभकामनाएँ !

बधाई !

समाज की उपलब्धि !

पीयूष गाड़ोदिया (सुपुत्र ममता, संजय गाड़ोदिया) नगांव में असम लोक सेवा आयोग (APSC) द्वारा कराए गए Combined Competitive Examination को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण कर **'कर अधीक्षक'** के पद हेतु चयन होने पर सम्मेलन परिवार हार्दिक बधाई देता है (पीयूष National Institute of Technology शिलचर से B.Tech in Mechanical Engineering को भी डिग्री प्राप्त कर चुका है। पीयूष के पिता श्री संजय कुमार गाड़ोदिया इस समग्र मारवाड़ी सम्मेलन की नगांव शाखा के सचिव तथा पूपमास के मंडलीय सहायक सचिव है। पीयूष की यह उपलब्धी सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज को गौरवान्वित करता है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन पीयूष को इस उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई अवं शुभकामनाएँ देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की दो दिवसीय गुवाहाटी प्रवास के दौरान गुवाहाटी में समाज की महिलाओं के साथ सार्थक बैठक में सम्मेलन की गतिविधियों के उपर विचार– विमर्श।

मारवाड़ी सम्मेलन के प्रतिनिधि मंडल का मंत्री अशोक सिंघल से मुलाकात

अध्यक्ष के नगर विकास मंत्री श्री अशोक सिंघल से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया के नेतृत्व में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन गोयनका, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका, पूर्वोत्तर अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश खंडेलवाल, प्रदेश महामंत्री श्री अशोक अग्रवाल, श्री कैलाश जी काबरा तथा श्री सज्जन शर्मा ने गुवाहाटी स्थित आवास पर मुलाकात की तथा समाज तथा देश के विषयों पर विस्तृत चर्चा की।

वरिष्ठ समाजसेवी गौरीशंकर अग्रवाल को किया गया सम्मानित

तेरापंथ जैन समाज के आचार्य महाश्रमण जी के सुशिष्य जैन मुनि जी के कटक तेरापंथ भवन में चातुर्मास के समापन दिवस पर, जैन मुनि श्री जिनेश जी, परमानंद जी एवं कृणाल स्वामी जी की गौरवमयी उपस्थिति में आयोजित एक कार्यक्रम के मध्य में, राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारी रह चुके, सम्मेलन के लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सुशोभित बोलांगीर के, (हाल भुबनेश्वर प्रवासी) वरिष्ठ समाजसेवी गौरीशंकर अग्रवाल को, उनके ५० साल से भी ज्यादा समय तक सम्मेलन को उत्कृष्ट सेवाओं के लिए, प्रांतीय उपाध्यक्ष रह चुके बोलांगीर शाखा के अध्यक्ष एवं प्रांतीय सम्मान समिति के चेयरमैन इंजीनियर मनोज जैन ने गोल्ड मेडल एवं कटक शाखा ने शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। अंतरराष्ट्रीय अग्रवाल महिला समिति की प्रांतीय अध्यक्षा संतोषी चौधरी एवं तेरापंथ जैन समाज ने भी गौरिशंकर अग्रवाल एवं मनोज जैन को अंगवस्त्र से सम्मानित किया। कटक शाखा के पदाधिकदारियों ने भी मनोज जैन को अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन कटक शाखा के अध्यक्ष दिनेश जोशी, सचिव सुभाष केडिया, कोषाध्यक्ष पुरुषोत्तम अग्रवाल, जनसंपर्क अधिकारी निर्मल पुर्वा, क्रांति ओडिशा के नंदकिशोर जोशी, उपाध्यक्ष कमल सिकरिया, पवन तायल, पद्म भावसिंक, राजकुमार सुल्तानिया, अशोक चौबे चंडी भाई, राजेश अग्रवाल आदि सम्मेलन के पदाधिकारी गण उपस्थित थे। कटक शाखा के अध्यक्ष दिनेश जोशी ने अपने उद्‌बोधन में, सम्मेलन को कार्यक्रम में शामिल होने के लिए निमंत्रण एवं सम्मेलन के एक वरिष्ठ कर्मठ कार्यकर्ता को, अपने कार्यक्रम के मध्य में, सम्मानित करने की स्वीकृति प्रदान करने के लिये, महाज्ञानी गुणी सहृदय जैन मुनि श्री जिनेश जी एवं कटक जैन समाज के अध्यक्ष मोहन लाल सिंघी समेत पूरे जैन समाज को बहुत बहुत धन्यवाद ज्ञापन करते हुए आभार व्यक्त किया।

संक्षिप्त परिचय : श्री श्रीगोपाल तुलस्यान

उत्तर प्रदेश के नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री श्रीगोपाल तुलस्यान जी का जन्म ७ जुलाई १९५०, में कानपुर शहर में हुआ। उनकी शिक्षा बी. डेक्सट (जी. सी. टी. आई.) सर्वश्रेष्ठ अंक हेतु आपको चान्सलर्स मेडल एवं अपने एम. ए. इकोनोमिक्स (१९७४) में पास की।

पिछले ४० से अधिक वर्षों से टेक्सटाइल इण्डस्ट्री में मार्केटिंग एवं वितरण से जुड़े हुए है।

विभिन्न मिलों मे उत्पादन एवं वितरण कार्य जैसे रिलायन्स इण्डस्ट्रीज लिमिटेड (टेक्सटाइल डिवीजन), पी. जी. फैब्रिक्स, बजाज सिल्क फैब प्राइवेट लिमिटेड, बी.एस. लिमिटेड।

पिछले छह माह से यू.पी.टी.टी.आई. कानपुर के बोर्ड ऑफ गवर्नेंस के सदस्य, ब्रह्मावर्त जनियर चैम्बर के संस्थापक अध्यक्ष (१९७५-७६), उपाध्यक्ष – इण्डियन जेसीज (१९७६), निदेशक – हिन्दी पब्लिकेशन इण्डियन जेसीज (१९७९), अध्यक्ष - लॉयन्स क्लब ऑफ कानपुर गैन्जेज (१९९३-९४), डिस्ट्रिक्ट गवर्नर– लॉयन्स क्लब इण्टरनेशनल (डिस्ट्रिक्ट ३२१-बी२), संस्थापक सचिव – अखिल भारतवर्षी मारवाड़ी सम्मेलन, कार्यकरी समिति – राजस्थान भवन, अध्यक्ष – भारत सेवा संकल्प एवं कई अन्य सेवा संस्थाओं के पदो को सुशोभित किया है। इसके अलावा सामाजिक सेवा कार्य जैसे मेगा स्वास्थ्य चिकित्सा शिविरों में सहायक, आइ चेक अप कैम्प्स का आयोजन, आई ऑपरेशन कैम्प्स का आयोजन, शिक्षा के क्षेत्रों मे गतिविधियाँ, टी.बी. मरीजों को पौष्टिक आहार योजना में योगदान, गूंगे बहरे बच्चों को ADIP स्कीम के अन्तर्गत डॉ. एस.एन. मेहरोत्रा मेमोरियल ट्रस्ट के साथ मिलकर ४५० गूंगे बहरे बच्चों को कॉक्लियर इम्प्लान्ट में सहयोग एवं मानसिक विकलांग बच्चों को सहायता एवं शिक्षा में सहयोग जैसी सहायता कार्य से जुड़े हुए है। हर समाज में अपना पुरा सहयोग देते है।

प्रादेशिक समाचार : उत्तर प्रदेश

- उत्तर प्रदेश प्रांतीय मारवड़ी सम्मेलन का प्रांतीय समागम संपर्क २०२२ संपन्न
- कानपुर के श्रीगोपाल तुलस्यान निर्विरोध प्रांतीय अध्यक्ष निर्वाचित हुए
- राष्ट्रीय व सामाजिक चुनौतियों के लिए युवाओं को लेनी होगी जिम्मेदारी
- संस्कार और परंपरा से ही संस्कृति का रक्षण संभव
- आर के चौधरी और डॉ. शिवानी व अन्य को समाज गौरव सम्मान

उत्तर प्रदेश प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय समागम संपर्क २०२२ का आयोजन मारवाड़ी सम्मेलन की वाराणसी शाखा के आतिथ्य में रविवार १३ नवम्बर को मारवाड़ी युवक संघ भवन लक्सा में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों से एवं स्थानीय मारवाड़ी समाज बंधुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रांतीय अध्यक्ष उमाशंकर अग्रवाल ने कहा कि १९३५ में स्थापित अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने सदैव ही राष्ट्रीय व सामाजिक चुनौतियाँ का सामना किया है और राह दिखाई है। उन्होंने आगे कहा कि संगठन की शक्ति समाज और व्यक्तियों के आगे बढ़ने में सहायक होती है।

चुनाव अधिकारी व सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अनिल के जाजोदिया ने चुनाव प्रक्रिया का संचालन किया और प्रांतीय अध्यक्ष के चुनाव में कानपुर के श्रीगोपाल तुलस्यान के निर्विरोध निर्वाचन की घोषणा की। अपने प्रथम उद्‌बोधन में श्रीगोपाल तुलस्यान ने कहा कि देश के विकास और उन्नति में मारवाड़ी समाज ने सदा ही उल्लेखनीय योगदान दिया है। मूलतः परोपकार, सेवा, व्यापार और उद्यम में अग्रणी इस समाज की सेवाओं को निकट भविष्य में बड़ा आयाम दिया जायेगा और उत्तर प्रदेश में सम्मेलन की २५ नई शाखाओं की स्थापना की जाएगी। उन्होंने प्रांतीय टीम में कुछ पदाधिकारियों के मनोनयन की भी घोषणा की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्टाम्प तथा न्यायालय शुल्क एवं पंजीकरण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) उ. प्र. रविन्द्र जायसवाल ने कहा कि मारवाड़ी संस्कृति ने सदैव ही राष्ट्र प्रेम और जनसेवा को प्राथमिकता दी है और समय समय पर पूरे देश के समक्ष शानदार उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। महाराणा प्रताप, भामाशाह, बिड़ला और अन्य का उल्लेख करते हुए उन्होंने नई पीढ़ी का इस विरासत को आगे बढ़ाने का आह्वाहन किया। उन्होंने शासन की नीतियों और कल्याणकारी योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया।

इस अवसर पर उल्लेखनीय योगदान के लिए समाज के विशिष्ट व्यक्तियों को समाज गौरव सम्मान से सम्मानित करने की घोषणा की गयी जिनमें प्रशासनिक नेतृत्व के लिए मंडलायुक्त कौशल राज शर्मा, उद्योग एवं जनसेवा के लिए आर के चौधरी, सामाजिक चेतना व सेवा हेतु अयोध्या के भागीरथ मल पचेरिवाल, कला संगीत और संस्कृति हेतु प्रतापगढ़ की डॉ. शिवानी मातनहेलिया प्रमुख रहे और उपस्थित गणमान्यों को अंगवस्त्रम और मानपत्र से सम्मानित किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुए पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अनिल के जाजोदिया ने कहा मारवाड़ी सम्मेलन के इतिहास और सामाजिक योगदान पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि लोक कल्याण के लिए स्कूल, अस्पताल, धर्मशाला, प्याऊ और मंदिर के निर्माण में आगे रहने वाले मारवाड़ी समाज ने हमेशा ही बढ़ चढ़ कर सेवा की है। राजस्थान हरियाणा और मालवा के मूल निवासी हमारे पूर्वज देश विदेश के जिन भी भागों में गए वहाँ घुलमिल गए, वही पर सेवाकार्य किये और स्थानीय आर्थिक गतिविधि, संस्कृति व लोक कला में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वाराणसी शाखा के अध्यक्ष श्रीनारायण खेमका ने अतिथियों का स्वागत किया और अपने कार्यकाल में दिए गए सहयोग हेतु आभार ज्ञापित किया। उन्होंने नए सत्र हेतु अध्यक्ष अनुज डिडवानिया, उपाध्यक्ष अनिल अग्रवाल, दीपक माहेश्वरी और सचिव मनमोहन लोहिया, कोषाध्यक्ष मनीष लोहिया, संयुक्त सचिव हेमदेव अग्रवाल, संगठन सचिव कृष्ण कुमार काबरा और प्रचार सचिव सुरेश तुलस्यान के नेतृत्व में नई टीम की घोषणा की और उनका परिचय कराया।

इस अवसर पर मारवाड़ी गौरव की नई मंजिले विषय पर परिचर्चा का भी आयोजन किया गया। प्रथम वक्ता उद्यमी दीपक बजाज ने कहा कि हर पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि वह उस दौर के अनुसार राष्ट्र व समाज का गौरव बढ़ाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान करे। व्यक्तियों की सफलता में सामाजिक योगदान का महत्त्व बताते हुए उन्होंने कहा कि हर किसी को अपना कार्य इस प्रकार से करना होगा कि उसमें जनकल्याण और सामाजिक गौरव का उद्देश्य निहित हो, कार्यक्रम के आज़मगढ़ के श्याम सुंदर डालमिया, सुल्तानपुर के अचलेश अग्रवाल, प्रदीप झेलिया, मऊ के एन्थोनी अग्रवाल, मुगलसराय के पंकज अग्रवाल आदि ने भी सहभागिता की।

कार्यक्रम को मारवाड़ी युवक संघ के अध्यक्ष पुरुषोत्तम जालान व प्रधानमन्त्री महेश चौधरी ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम के दौरान आपसी परिचय, सांगठनिक चर्चा, खुला सत्र आदि का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संयोजन आनंद लडिया, मनीष लोहिया द्वारा कृष्ण कुमार काबरा, मनीष गिनोडिया, सुरेश तुलस्यान व अन्य के सहयोग से किया गया, संचालन अनिल अग्रवाल ने किया।

राँची में झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का उद्घाटन

जीवन में सेवा और संस्कार का समावेश जरुरी : राज्यपाल

संगठन में महिलाओं की सक्रिय भगीदारों के साथ समाज और परिवार में संस्कार का समावेश होना आवश्यक हैं, संस्कारी परिवार के बच्चे कभी भी गलत रास्ते पर नहीं जाते है, मारवाड़ी समाज सेवा भावना के तहत कार्य कराती है, यह बात राज्यपाल रमेश बैस ने रविवार को कही, वह मारवाड़ी भवन में आयोजित झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के आठवें अधिवेशन के उद्घाटन के मौके पर संघोषित कर रहे थे। उन्होंने आगे कहा कि छत्तीसगढ़ में इस समाज के द्वारा अस्पताल आने वाले मरीजों के परिजनों के लिए सुविधायुक्त भवन बनाया गया है, जो न्युनतम शुल्क पर परिजनों को दिया जाता है। ऐसी व्यवस्था झारखंड में भी करने पर वह लोग राजी है, सरकार से बात कर वह जमीन मुहैया कराने को कहेंगे, ताकि रिम्स में आनेवाले मरीजों के परिजनों को सुविधा मिल सके।

समाज और देश के लिए काम कर रहा मारवाड़ी समाज : मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने कहा कि आगे बढ़ने के लिए संगठन जरुरी है, मारवाड़ी समाज का सेवा भाव के साथ समाज और राष्ट्र के लिए काम करने का इतिहास रहा है, राष्ट्र और समाज के समक्ष जब कठिन परिस्थिति आयी, तो उससे उबरने में यह समाज निरंतर आगे रहा है। इस परंपरा को कायम रखते हुए नयी सोच के साथ काम करने की जरूरत है। श्री दास ने कहा कि शादी विवाह व अन्य समारोह में होने वाली फिजूलखर्ची पर रोक लगा कर यदि मरीजों के लिए काम किया जाये, तो समाज में बेहतर वातावरण तैयार होगा।

राजनीतिक क्षेत्र में समाज की रहे भागीदारी : राष्ट्रीय अध्यक्ष गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने कहा कि राजनीतिक क्षेत्र में भी समाज की सशक्त भागीदारी हो, इसे लेकर सक्रियता के साथ काम होगा, धनवाद के पूर्व मेयर चंद्रशेखर अग्रवाल ने कहा कि मारवाड़ी समाज शुरु से समाज के प्रति समर्पित होकर कार्य करता रहा है। नवनिर्वाचित प्रांतीय अध्यक्ष बसंत कुमार मित्तल ने कहा कि राज्य के सभी जिलों में कार्यालय खोलने के साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों को रोकने के लिए कार्य किया जायेगा। राँची में बालिका छात्रावास का भी निर्माण कराने का लक्ष्य है। सम्मेलन में कर्नाटक के प्रदेश अध्यक्ष सुभाष अग्रवाल, उत्कल के गोविंद अग्रवाल, पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष ओमप्रकाश अग्रवाल, महिला इकाई की राष्ट्रीय अध्यक्ष नीरा बथवाल, चैंबर अध्यक्ष किशोर मंत्री, पूर्व सांसद अजय मारू, सुरेश चंद्र अग्रवाल, ललित कुमार पोद्दार, मीडिया संयोजक संजय सर्राफ आदि मौजुद थे। संचालन विनय सरावगी और स्वागत महेश पोद्दार ने किया।

सरकार सहयोग करे तो करायेंगे भवन निर्माण : स्वागत अध्यक्ष पूर्व सांसद महेश पोद्दार ने राज्यपाल के समक्ष कहा कि यदि सरकार सेवा कार्य के लिये भवन निर्माण की भूमि उपलब्ध करा दें, तो झारखंड इकाई भी मरीज के परिजनों की सुविधा के लिए सुविधायुक्त भवन का निर्माण कराने का काम करेगी।

संकल्प २०२२ स्मारिका का विमोचन

सम्मेलन के दौरान राज्यपाल रमेश बैस ने संकल्प २०२२ स्मारिका का विमोचन किया। मां अन्नपूर्णा सेवा अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए राज्यपाल ने प्रमोद अग्रवाल, पुरुषोत्तम विजयवर्गीय, मनोज रूईया और द्वारिका प्रसाद अग्रवाल को सम्मानित किया।

सेवा, संस्कार व संस्कृति को बचाना है : समापन समारोह में मुख्य अतिथि स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता ने बौद्रिक विकास पर जोर देते हुये कहा कि इससे ही समाज के निचले स्तर के लोगों को मजबुती मिलेगी, दहेज जैसी कुरीति को खत्म करना आवश्यक है, सेवा, संस्कार व संस्कृति को बचाना है। विशिष्ट अतिथि विधायक सीपी सिंह ने कहा कि मारवाड़ी समाज का योगदान समाज के हर वर्ग और क्षेत्रों में है। मुख्य वक्ता कोल्हान विश्विविद्यालय के प्रोवीसी डॉ. पवन पोद्दार ने कहा कि देश के आंदोलन में मारवाड़ी समाज का अहम योगदान है। संचालन रवि शंकर शर्मा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन स्वागत मंत्री ललित कुमार पोद्दार ने दिया।

शादी की फिजूलखर्ची पर चिंता जतायी

राज्यपाल ने कहा कि राष्ट्र और समाज की बेहतरी के लिए काम करने वाले हमेशा याद किये जाते है। राज्यपाल ने शादी विवाह में बढ़ रही फिजूलखर्ची पर चिंता जतायी। उन्होंने कहा कि शादी के वक्त पूछा जाता है कि शादी में कितना खर्च करेंगे। इसमें प्रतिस्पर्द्धा हो रही है। विवाह में करोड़ रुपये खर्च कर दिये जा रहे हैं। यदि इस फिजूलखर्ची की जगह वर और वधू के नाम पर एफ.डी. कर दी जाये, तो उनकी जिंदगी संवर जायेगी।

Apollo
TOUCHING LIVES

Certificate No. : M-0342
NABL Accredited

Apollo Clinic
Expertise. Closer to you.

P-72, Prince Anwar Shah Road, Opp. South City Mall, Kolkata-700 045
Tel. : 4021-2525-55, E-mail : pashahroad@theapolloclinic.com

SERVICES AT A GLANCE

- Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments
- Radiology

- MRI / CT / Scan | - Digital X-Ray
- Ultrasonography | - Colour Doppler Study

- Cardiology

- ECG | - Echo-Cardiography
- Echo-Colour Doppler | - Holter Monitoring
- Treadmill Test (TMT)

- Wide Range of Pathology
- Pulmonary Function Test
- UGI Endoscopy / Colonoscopy
- Physiotherapy
- EEC / EMG / NCV
- General & Cosmetic Dentistry
- Elder Care Service
- Sleep Study (PSG)
- EYE / ENT Care Clinic
- Gynae and Obstetric Care Clinic
- Haematolgy Clinic
- Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep
- Health Check-up Packages
- Online Reporting
- Report Delivery

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 97481-22475

98301 96659

Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks

Yours Tastefully
Anmol
हर पल अनमोल
हर घर अनमोल
www.anmolindustries.com | Follow us on:

समय और सोच भले ही बूढ़ा हो जाए, सामाजिक कार्य निरंतर चलते रहना चाहिए : राज्यपाल

रिम्स के मरीजों के परिजनों के लिए बनाएंगे ४ मंजिला मकान, बालिका छात्रावास भी शीघ्र

"संकल्प २०२२" स्मारिका का विमोचन... प्रांतीय अध्यक्ष बसंत मित्तल बोले-२ वर्षों में संगठन को करेंगे मजबूत

अधिवेशन में राज्यपाल रमेश बैस, पूर्व सीएम रघुवर दास, पूर्व राज्यसभा सांसद महेश पोद्दार समेत मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारी।

यदि सरकार ने जमीन उपलब्ध करा दी तो रिम्स में एक साल के अंदर गरीब मरीजों के परिजन (अटेंडेंट) के रहने के लिए चार मंजिला भवन बनाया जाएगा। राँची में बालिका छात्रावास भी जल्द बन जाएगा, ताकि बाहर से आने वाली गरीब छात्राओं को दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़े। इसके लिए समिति भी बनाई गई है। पूर्व सांसद महेश पोद्दार को चेयरमैन बनाया गया है। प्रांतीय कार्यालय भी राँची में शीघ्र बनेगा। इन सभी के लिए जमीनें चिह्नित की जा रही हैं। ये घोषणाएं रविवार को मारवाड़ी सम्मेलन ने की। झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अष्टम अधिवेशन राँची जिला मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में मारवाड़ी भवन में संपन्न हुई। उद्घाटन झारखंड के राज्यपाल रमेश बैस ने किया। पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास बतौर मुख्य अतिथि मौजूद थे। राज्यपाल ने कहा कि समाज में महिलाओं का भागीदारी होनी चाहिए। विवाह में फिजूलखर्ची, मृत्यु भोज पर अनावश्यक खर्च से समाज को बचाना होगा। उन्होंने कहा कि समाज हमेशा जवान रहे समय एवं सोच भले ही बूढ़ा हो जाये। सामाजिक कार्य निरंतर चलते रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि अस्पतालों में आने वाले मरीजों के परिजन इधर-उधर भटकते हैं, उनके ठहरने का उचित बंदोबस्त करना आवश्यक है। इसके लिए एक भवन का निर्माण रिम्स के आसपास करें। इसके लिए झारखंड मारवाड़ी समाज के लोग तैयार है। इस पर मारवाड़ी सम्मेलन के जिलाध्यक्ष सुरेश चंद्र अग्रवाल ने कहा कि एक साल के अंदर राँची जिला मारवाड़ी सम्मेलन भवन बनाएगा, बस सरकार जमीन उपलब्ध करा दे। उन्होंने राज्यपाल से जमीन उपलब्ध करवाने का भी आग्रह किया।

देश को संकट से निकालने में मारवाड़ी समाज की अहम भूमिका : रघुवर

मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने कहा कि मारवाड़ी समाज राज्य की आन बान और शान है। देश को संकट से निकालने में मारवाड़ी समाज की अहम भूमिका रही हैं। मुख्य वक्ता अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने कहा कि मारवाड़ी समाज के सदस्यों द्वारा विभिन्न प्रकार के सामाजिक सुधार एवं सेवा कार्य भी चलाए जाते है।

बसंत मित्तल को अध्यक्ष पद की दिलाई शपथ

अधिवेशन में प्रांतीय अध्यक्ष ओम प्रकाश अग्रवाल ने नवनिर्वाचित प्रांतीय अध्यक्ष बसंत कुमार मित्तल को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। तत्पश्चात राज्यपाल रमेश बैस, मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास तथा सभी सम्मानित अतिथियों ने 'संकल्प २०२२' स्मारिका का विमोचन किया। अध्यक्षता झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष ओम प्रकाश अग्रवाल और संचालन सम्मेलन पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विनय कुमार सरावगी ने किया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष बसंत कुमार मित्तल ने कहा कि २ वर्षों में संगठन को मजबूत करना, सभी अनुषंगिक इकाइयों की जोड़ना, शादी में प्री बेडिंग की प्रथा की बंद करना और पंचायत व्यवस्था को लागू कराना, प्रांतीय भवन एवं बालिकाओं के लिए छात्रावास का निर्माण कराना आदि शामिल हैं।

दहेज जैसी कुरीतियां खत्म हो : बन्ना गुप्ता

समापन समारोह के मुख्य अतिथि स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता ने कहा समाज एवं संगठन के धरातल पर बौद्धिक विकास होना आवश्यक है। जिससे समाज के निचले स्तर को मजबूती प्रदान कर सकें। उन्होंने कहा कि मिट्टी के मूर्ति को बना कर मेंवा खिलाते हैं और घर की सीता-लक्ष्मी को दहेज के लिए जलाते है। देश में दहेज जैसी कुरीतियां को खत्म करना आवश्यक है। विधायक सी.

पी. सिंह ने कहा कि एक कहावत है **"जहां न जाए बैलगाड़ी वहां पहुँचे मारवाड़ी"**। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी समाज का योगदान समाज के हर वर्ग और हर क्षेत्रों में व्यापक मात्रा में अपनी सेवा के माध्यम से लोगों तक पहुँच पाती है। मुख्य वक्ता कोल्हान विवि के प्रति कुलपति उपकुलपति डॉ. पवन पोद्दार ने देश के आंदोलन में मारवाड़ी समाज का बहुमूल्य योगदान रहा है।

कई राज्यों एवं झारखंड प्रदेश के सभी जिलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया

अधिवेशन में उत्कल प्रांत के अध्यक्ष गोविंद अग्रवाल, कर्नाटक प्रांत के अध्यक्ष सुभाष अग्रवाल, दिल्ली के महावीर रुंगटा, राजकुमार केडिया, भागचंद पोद्दार, विष्णु राजगढ़िया, किशोर मंत्री, अरुण बुधिया, मनोज बजाज, संजय सर्राफ, प्रदीप राजगढ़िया, राजेंद्र केडिया, नंदकिशोर पाटोदिया, मनोज चौधरी, सुभाष पटवारी, कौशल राजगढ़िया, अशोक नारसरिया, प्रेम मित्तल, दीपक पारीक, निर्मल बुधिया, मंजीत जाजोदिया, आकाश अग्रवाल, नरेश बंका, रोहित पोद्दार, प्रमोद सारस्वत, श्याम सुंदर अग्रवाल, शशांक भरद्वाज, अजय बजाज, द्वारिका अग्रवाल, पवन पोद्दार, मनोज रुइया, अमित चौधरी, राम बांगड़, प्रकाश पटवारी, कमल खेतावत, सुनील केडिया, श्याम सुंदर शर्मा, मनीष लोधा, सुनील पोद्दार, राजेश भरतीया, मीडिया संयोजक संजय सर्राफ, रमाशंकर बगाड़िया, सौरभ कुमार, अनु अग्रवाल, नेहा पटवारी के अलावे बड़ी संख्या में सदस्यों ने भाग लिया।

प्रादेशिक समाचार : दिल्ली

पश्चिमी दिल्ली शाखा द्वारा दीपावली मिलन समारोह

दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की पश्चिम दिल्ली शाखा द्वारा १६ अक्टूबर २०२२ को हरी नगर में दीपावली मिलन समारोह व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करिस्टल पैलेस बैंक्वेट मायापुरी में किया गया। जिसमें शाखा अध्यक्ष श्री नवरतन अग्रवाल जी ने कार्यक्रम की शुरुआत हमारे मुख्य अतिथि श्री वी. पी. अग्रवाल जी, हरी नगर विधायिका श्रीमती राज कुमारी ढिल्लो, निगम पार्षद श्रीमती किरण चोपड़ा आदि ने दीप प्रज्ज्वलित किया।

मंच संचालन डॉ. संदीप मित्तल व जय प्रकाश बबल ने किया। श्री मनोज गर्ग व श्री बनवारी लाल शर्मा ने पुरे कार्यक्रम का संयोजन किया।

श्री नारायण लाहोटी व पुनम चंद शर्मा ने सांस्कृतिक कार्यक्रम का संयोजन अच्छे से किया। स्वागत संयोजक श्री दामोदर शर्मा व किरण महीपाल नें सभी मेहमानों का स्वागत करते हुए प्रचार-प्रसार का दायित्व श्री विजय दायमा व वैभव गुप्ता ने संभाला।

पूर्व प्रांत अध्यक्ष श्री राजकुमार मिश्रा जी ने दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सत्र २०२२-२०२४ के लिए हुए चुनावों की घोषणा करते हुए श्री लक्ष्मीपत भुतोड़िया को पुनः प्रान्तीय अध्यक्ष घोषित किया उपस्थित सदस्यों ने श्री भूतोड़िया का करतल ध्वनि से स्वागत किया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन गोयनका जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत त्यौहारों का देश है और प्रत्येक त्यौहार हमारी सांस्कृतिक एवं संस्कारों की विरासत है, हमें अधिक से अधिक भारतीय त्यौहार मनाने चाहिए एवं युवा पीढ़ी को भी इसके लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, महिलाए इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

नव निर्वाचित दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष श्री लक्ष्मीपत भुतोड़ीया जी ने समाज को संगठित रहने पर अपने विचार व्यक्त किये। शाखा के कोषाध्यक्ष श्री दुलीचंद शर्मा जी ने आय व खर्च पर नियंत्रण रखा। कार्यकारिणी सदस्य - वीरेंद्र कुमार सिंघी, पवन कुमार

दाधीच, धनराज नाई, राजेश तिवारी, श्याम सुंदर डीडवानिया, रघु प्रसाद तापड़िया, पंकज मखीजा, संजीव अग्रवाल, सतपाल गुप्ता, अविनाश पारीक, प्रवीण मित्तल, दिनेश शर्मा, हरी मोहन शर्मा ने समारोह कार्य में पूर्ण सहयोग दिया।

अंत में शाखा महामंत्री श्री सूर्य प्रकाश लाहोटी ने कार्यक्रम में आये सभी मेहमानों को धन्यवाद दिया। तथा सभी ने रात्रि भोज का भी आनंद लिया।

त्यौहारों के रंग : लोकतंत्र के महापर्व के संग

श्री जुगल किशोर अग्रवाल नये अध्यक्ष निर्वाचित

दीपावली के अवसर पर परंपरागत ढंग से सम्मेलन भवन में श्री महालक्ष्मी गणेश पूजन आनंद मंगल पूर्वक किया गया। मारवाड़ी समाज की संस्कृति के अनुरूप आंचलिक समरसता को प्रगाढ़ करते हुए बिहार के महान और पावन पर्व छठ के अवसर पर पटना, मोतिहारी, बेतिया, डेहरी ओंन सोन, गोपालगंज, तेघड़ा मुजफ्फरपुर समेत प्रांत की २८ शाखाओं के द्वारा "सूर्योपासना : छठ महोत्सव - ई है हमरा बिहार" का आयोजन किया गया।

इस दौरान छठ घाटों पर जन सुविधा के अंतर्गत सफाई और प्रकाश का प्रबंध, सूचना प्रसारण एवं प्राथमिक चिकित्सा शिविर स्थापित किया गया एवं छठ व्रतियों के बीच पर्व से संबंधित सामग्री, अर्घ्य के लिए दूध, चाय और भोजन आद का वितरण किया गया, तेघड़ा शाखा के द्वारा पच्चीस लाख रुपए मूल्य की आठ हजार साड़ियों का छठ व्रतियों के बीच वितरण उल्लेखनीय है, डेहरी ऑन सोन शाखा ने भी काफी संख्या में साड़ियों का वितरण किया।

आगामी सत्र के प्रादेशिक अध्यक्ष के निर्वाचन की प्रक्रिया प्रदेश के ५ क्षेत्रों के १५ प्रमंडल की १६२ शाखाओं के ८०३७ मतदाताओं द्वारा ३१ मतदान केंद्रों पर औसतन ६०% मतदान के साथ व्यवस्थित और अनुशासित ढंग से संपन्न की गई। पटना में आयोजित प्रादेशिक सभा के दौरान चुनाव अधिकारी राजेश बजाज के द्वारा आगामी सत्र २०२२-२४ के लिए कोशी अंचल के अंतर्गत सुपौल निवासी श्री जुगल किशोर अग्रवाल अध्यक्ष घोषित किए गए।

राजस्थानी भाषा!

मेवाड़ी, ढूंढाड़ी सागै
हाडोती, मरुवाणी,
सगळां स्यूं रळ बणी जकी बा
भासा राजस्थानी,

आप आप री मत थे हांको
निरथक खचांताणी,
मीरा लिखगी बीं न मानो
भासा राजस्थानी,

स्बै भरतपुर अलवर अलघा
आ सोचो क्यांताणी।
हिन्दी री मा सखी बिरज री
भासा राजस्थानी,

खोटी सुण सुण सीख, गमावो
थे मत निज रो पाणी,
जनपद री बोल्यां है मिजियां
माळा राजस्थानी,

इण्या गिण्या कीं सबदां न ले
बिरथा बात बधाणी,
घर में राड़ जगत में हांसी
मेटै राजस्थानी,

कुण बरजै है पोखो सगळा
निज निज घर री बाणी,
आखो राजस्थान जोड़सी
भासा राजस्थानी।

हरियाणा दिवस – १ नवम्बर के अवसर पर

हरियाणा को फूड बाउल ऑफ इंडिया (Food Bowl of India) और साथ ही कृषि प्रधान क्षेत्र होने की कारण इसे ग्रीन लैंड ऑफ इंडिया (Green Land of India) कहा जाता है। खेती किसानी से लेकर खेलों की जब बात होती है हरियाणा का जिक्र सबसे ऊपर होता है। २६ अक्टूबर २०१४ को मनोहर लाल खट्टर हरियाणा के मुख्यमंत्री बने और प्रदेश की राजनीति में भाई-भतीजावाद पर एक ब्रेक लगा। फरीदाबाद में बीजेपी ने जन उत्थान रैली नें गृहमंत्री अमित शाह ने सीएम मनोहर लाल खट्टर की जमकर तारीफ करते हुए कहा था कि पिछले आठ साल में खट्टर सरकार ने हरियाणा को बदल दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी हरियाणा के सीएम की पीठ थपथपा चुके है। हरियाणा दिवस के अवसर पर जानते हैं कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के आठ वर्ष के कार्यकाल में हरियाणा में किन किन क्षेत्रों में बदलाव हुए और प्रदेश की तस्वीर बदली।

बजट में युवाओं के लिए थी ये बात

हरियाणा के आम बजट में निजी क्षेत्रों मे रोजगार के लिए २०० मेले लगाने का लक्ष्य रखा गया था और युवाओं को विदेशों में प्लेसमेंट कराने के लिए हरियाणा विदेश रोजगार प्लेसमेंट सेल स्थापित करने की बात कही। सरकार का लक्ष्य है कि आगामी दो साल में इस सेल के माध्यम से एक लाख से अधिक युवाओं का प्रशिक्षण और प्लेसमेंट कराया जाएगा। बजट में प्रावधान किया है कि विदेश में नौकरी तलाशने वाले युवाओं को कौशल प्रशिक्षण एवं विकास तंत्र तैयार किया जाएगा। सरकार ने परिवार पहचान पत्र के माध्यम से बेरोजगार युवाओं की असली संख्या पता लगाई है और इन युवाओं को उद्यमी और रोजगार योग्य बनाने के लिए रणनीति पर काम हो रहा है। रोजगार पोर्टल पर १४५७४ कर्मचारियों और २७ जॉब एग्रीगेटस को जोड़ा गया है।

शिक्षा के क्षेत्र में अहम साबित हुए ये फैसले

शिक्षा के क्षेत्र में मनोहर लाल खट्टर का यह फैसला काफी अहम साबित हुआ। महिलाओं की शिक्षा के लिए २० किलोमीटर पर महिला महाविद्यालय खोलने का फैसला किया और तकरीबन चार दर्जन महाविद्यालय शुरु हो चुके हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० की सिफारिशें लागू करने वाला पहला राज्य हरियाणा ही था। मनोहर लाल खट्टर सरकार का दावा है कि उन्होंने एक साल में महिलाओं के लिए १५ सरकारी कॉलेज खोले। इतना ही बीते ६ साल में ६७ नए राजकीय कॉलेज खोले है जिसमें ४२ महिलाओं के है। सरकार का कहना है कि प्रदेश में महाविद्यालयों की संख्या १७२ हो गई है। वहीं कक्षा ९वीं से लेकर १२वीं तक के सभी सरकारी स्कूलों के छात्रों के लिए नि:शुल्क पाठ्य पुस्तकों का प्रावधान है।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल के कार्यकाल के दौरान पिछले ८ सालों में स्वास्थ्य क्षेत्र में कई अहम फैसले हुए। वर्ष २०१४ में प्रदेश में ७ मेडिकल कॉलेज थे और एम.बी.बी.एस. सीटे केवल ७०० थी। वर्तमान सरकार के कार्यकाल के दौरान ६ कालेज खोले गए और आज एम.बी.बी.एस. सीटों की संख्या बढ़कर १७३५ हो गई है। २०२५ तक राज्य के मेडिकल कालेजों में स्नातक सीटों की संख्या ३०३५ तक बढ़ाने का है। प्रदेश में मेडिकल कालेजों में क्रिटिकल केयर आई.सी.यू. की स्थापना के लिए हरियाणा सरकार को अटल बिहारी बाजपेयी सुशासन पुरस्कार २०२१ से सम्मानित किया गया। जानकारी के अनुसार, प्रदेश में एक मेडिकल यूनिवर्सिटी, ९ मेडिकल कालेज और ७ नर्सिंग कालेज स्थापित किए जा रहा हैं। मुख्यमंत्री ने फरीदाबाद, रेवाड़ी, कैथल, कुरुक्षेत्र और पंचकूला में ६ नर्सिंग कालेज खोलने की घोषणा की थी। अब प्रदेश के २२ लाख परिवारों को आयुष्मान भारत योजना का लाभ मिल रहा है।

स्थानीय युवाओं को आरक्षण

निजी क्षेत्र की नौकरियों में स्थानीय युवाओं के लिए ७५ प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की ही गई है। खेलों के विकास में हरियाणा का कोई मुकाबला नहीं। सर्वाधिक पदकवीर इसी राज्य से आते हैं। पदक विजेता खिलाड़ियों को देश में सर्वाधिक पुरस्कार राशि हरियाणा में मिलती है, तो उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्पर्धाओं की तैयारी के लिए अग्रिम राशि का भी प्रावधान है। युवाओं को खेल सुविधा देने के मामले में हरियाणा बाकी राज्य के लिए उदाहरण प्रस्तुत करता है।

समाचार सार

केन्द्रीय साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली की ओर से २०२२ बाल साहित्य पुरस्कार के लिए अनुमोदित पुस्तकों की सूची राजस्थानी में

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रथम प्रवृति	विधा	निर्णायकगण
१	आश री किरण	रामीजलाल घोइला 'भारती'	२०१९	कहानी	श्री बुलाकी शर्मा
२	खुशी रा आसू	अब्दुल समद राही	२०१८	कहानी	
३	टाबरिया म्है टाबरिया	मानसिंह राठौड़ 'मातासर'	२०२०	कविता	श्री लक्ष्मानंदन कव्या
४	पेटूराम रो पेट	हरि शंकर आधारी	२०१९	कविता	
५	माछळयां रा आंसू	विश्वामित्र दाधीच	२०१९	कविच	डॉ. सुमन बिस्सा

४ नवम्बर – जन्मजयन्ती पर विशेष

जमनालाल बजाज : गरीब किसान का देशभक्त बेटा

आज बजाज के नाम से कौन नहीं वाकिफ, बात इलेक्ट्रिक मार्केट की हो, ऑटो सेक्टर की हो या फाइनेंस की हर जगह बजाज के नाम का सिक्का चलता है, बजाज स्कूटर से जहां हमारे बचपन की यादें जुड़ी हैं, वहीं बजाज के पंखों ने हमें गर्मी से राहत दी बेशक दिवंगत राहुल बजाज ने इस ब्रांड को ऊपर उठाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया हो लेकिन बजाज नामक इस साम्राज्य की नींव रखने का श्रेय एक स्वतंत्रता सेनानी को जाता हैं।

हम आज आपको उसी स्वतंत्रता सेनानी की कहानी बताने जा रहे हैं जिन्होंने खुद को देश की आजादी के लिए पूरी तरह से समर्पित कर दिया, इसके साथ ही उन्होंने बजाज जैसा एक ऐसा रास्ता बनाया जो सफलता की बुलंदियों तक जाता था, हम बात कर रहे हैं सेठ जमनालाल बजाज की वो जमनालाल जिन्हे गांधी जी का ५वां बेटा कहा जाता था।

जन्म से गरीब मगर किस्मत के धनी

४ नवंबर, १८८४ को राजस्थान (तब जयपुर रियासत) के सीकर जिले के 'काशी का बास' में जन्मे जमनालाल बचपन से सेठ नहीं थे, वह एक गरीब परिवार में माता पिता के तीसरे पुत्र के रूप में पैदा हुए थे। उनके पिता कनीराम एक गरीब किसान और माता बिरदीबाई गृहणी थी। जमनालाल का जन्म भले ही गरीबी में हुआ था लेकिन गरीबी उनका मुकद्दर नही थी। आज शायद जमनालाल के बारे में कोई न जानता अगर उन्हें वर्धा के सेठ बच्छराज ने गोद न लिया होता। उस समय ५ साल के जमनालाल चौथी कक्षा में पढ़ रहे थे जब सेठ बच्छराज ने उन्हें अपने पोते के रूप में गोद ले लिया और अपने साथ वर्धा ले आए।

जमनालाल बने सेठ जमनालाल बजाज

जमनालाल एक दिन अपने घर के बाहर तेज धूप में खेल रहे थे, इसी दौरान रास्ते से गुजरते हुए सेठ बछराज ने देखा सेठ जमनालाल पर आसक्त होकर रुक गये उन्हें गोद लेने का फैसला कर लिया। इसके बाद सेठ बच्छराज (बजाज) और उनकी पत्नी सादीबाई बछराज (बजाज) द्वारा एक पोते के रूप में अपनाया गया। ये अमीर राजस्थानी व्यापारी जोड़े थे लेकिन वर्धा, महाराष्ट्र में बस गए थे। सेठ बछराज ब्रिटिश राज में एक प्रसिद्ध और सम्मानित व्यापारी थे। इस तरह एक गरीब का बेटा जमनालाल, सेठ जमनालाल बजाज बन गया।

इस तरह जमनालाल उन चंद खुशकिस्मत बच्चों में से एक बन गए जो गरीबी में पैदा होने के बावजूद किस्मत में अमीरी लिखवा कर आते हैं, हालांकि जमनालाल अपनी इस अमीरी से खुश नहीं हुए न ही उन्होंने अन्य अमीरों की तरह ऐशो आराम की जिंदगी जीना पसंद किया। उनके लिए उनके पिता की दौलत कोई मायने नहीं रखती थी। उन्हें पैसों की खनक लुभा न सकी और वह देश सेवा में लगे रहे, जब सेठ जमनालाल १३ वर्ष के थे तब उनका विवाह वर्धा की जानकी देवी से हो गया।

दौलत से नहीं था मोह

सेठ जमनालाल का उनके पिता की दौलत से कितना मोह था इस बात का अंदाजा आप इस घटना से लगा सकते हैं। एक बार सेठ बच्छराज परिवार सहित एक समारोह में जा रहे थे, ऐसे में हर कोई चाहता है कि उनका परिवार शाही दिखे। इसी मंशा से उन्होंने जमनालाल से कहा कि वो भी हीरे-पन्नों से जड़ा एक हार पहन कर चलें, लेकिन जमनालाल फकीर किस्म के इंसान थे, उन्हें दौलत का दिखावा बिल्कुल नहीं भाता था। इसी बजह से उन्होंने हार पहनने से मना कर दिया। इस बात लेकर दोनो में ऐसी अनबन हुई कि जमनालाल घर छोड़कर चले गए, ये तब की बात है जब जमनालाल १७ साल के थे।

इतना ही नहीं बल्कि बाद में जमनालाल ने अपने पिता बच्छराज को एक स्टाम्प पेपर पर ये लिखकर भेजा कि उन्हें उनकी संपत्ति से कोई लगाव नहीं है। उन्होंने लिखा था कि, "मैं कुछ लेकर नहीं जा रहा हूँ, तन पर जो कपड़े थे, बस वही पहने जा रहा हूँ। आप निश्चिंत रहे मैं जीवन में कभी आपका एक पैसा भी लेने के लिए अदालत नहीं जाऊंगा। इसलिए ये कानूनी दस्तावेज बनाकर भेज रहा हूँ।

हालांकि सेठ बच्छराज का अपने बेटे से मोह नही टूटा और उन्होंने तमाम कोशिशों के बाद जमनालाल को ढूंढ लिया। इस के बाद उन्हें घर आने के लिए मनाया गया। वह घर आ गए लेकिन वो संपत्ति का त्याग कर चुके थे। इसके बाद जब विरासत में उन्हें संपत्ति मिली, तो उन्होंने उस संपत्ति को दान के रूप में ही खर्च किया।

देश को आजाद कराने में जुट गए

समाज सेवा के साथ साथ जमनालाल बजाज स्वाधीनता आंदोलन में भी बढ़ चढ़ कर योगदान देते रहे, हालांकि अपने धन के दम पर उन्होंने शुरुआत में अंग्रेजो की भी आर्थिक मदद की। उन्होंने पहले विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार को आर्थिक सहयोग दिया था, जिसके बाद उन्हे मानद मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया। उन्होंने युद्ध कोष में धन दिया तो उन्हें राय बहादुर की उपाधि से सम्मानित किया। हालांकि स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा बनने के बाद उन्होंने अंग्रेजों को आर्थिक सहयोग देना बंद कर दिया। १९२१ में जब वह असहयोग आंदोलन से जुड़े तब उन्होंने अपनी राय बहादुर की उपाधि अंग्रेजी सरकार को वापस लौटा दी।

स्वतंत्रता संग्राम में जुड़ने के साथ ही उनकी पहली मुलाकात पंडित मदन मोहन मालवीय से हुई। १९०६ में जब बाल गंगाधर तिलक ने अपनी मराठी पत्रिका का संस्करण निकाला तो जमनालाल बजाज ने अपने जेब खर्च से उन्हें १०० रुपए दिये थे।

बने गांधी जी के पांचवें बेटे

सेठ जमनालाल बजाज को सबसे ज्यादा महात्मा गांधी ने प्रभावित किया। जब गांधी जी १९१५ में दक्षिण अफ्रीका से वापस लौटे तो साबरमती में आश्रम बनाया। जमनालाल इस आश्रम में उनके साथ ही रहे। १९२० में नागपुर में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। उस अधिवेशन में जमनालाल ने अजीब सा प्रस्ताव रख दिया, दरअसल जमनालाल गांधी जी को एक पिता के रूप में अपनाना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने प्रस्ताव में कहा कि वो गांधीजी को अपने पिता के रूप में गोद लेकर उनके ५वें बेटे बनना चाहते हैं।

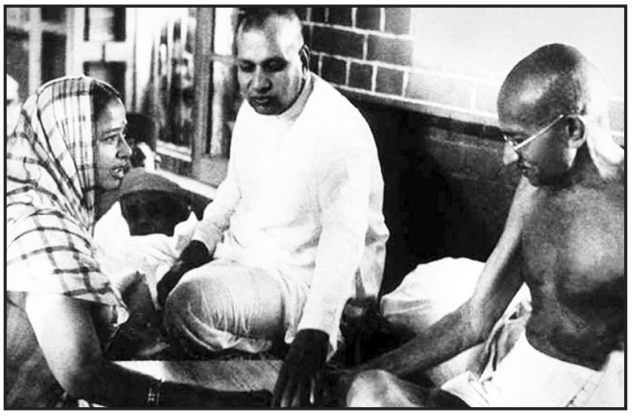

शुरुआत में गांधीजी के लिए भी ये प्रस्ताव हैरान कर देने वाला था लेकिन धीरे-धीरे इन्होने जमनालाल को अपना ५वां बेटा मान ही लिया। १६ मार्च १९२२ को साबरमती जेल से गांधीजी ने जमनालाल को भेजी एक चिट्ठी में लिखा, तुम ५वे पुत्र तो बने ही हो, लेकिन मैं योग्य पिता बनने की कोशिश कर रहा हूँ।

सेठ जमनालाल के मन में गांधी जी का बेटा बनने की ऐसी बेचैनी थी कि वो उनके मुंह में किसी और रिश्ते का संबोधन सुन कर चिढ़ जाते थे। एक बार गांधीजी ने जमनालाल को एक चिट्ठी लिखी और उसमें चिरंजीवी जमनालाल की जगह भाई जमनालाल लिख दिया। भाई के संबोधन से जमनालाल नाराज हो गये थे।

बजाज ग्रुप की स्थापना

१९२० के दशक में सेठ जमनालाल बजाज ने व्यापार की भूमि पर एक ऐसा बीज बोया जो आज व्यापार जगत का एक सघन वृक्ष बन चुका है। उन्होंने अपनी शुगर मिल के जरिए Bajaj Group की शुरुआत की। जमनालाल बजाज द्वारा शुरु किये गए इस ग्रुप की आज २५ से ज्यादा कंपनियां हैं, जिनका सालाना टर्नओवर २८० अरब रुपये से ज्यादा है।

सेठ जमनालाल बजाज एक उद्योगपति और स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं बल्कि समाज सेवक भी थे, उन्होंने निर्धन परिवार के बच्चों की शादियां करवाई। इस सजह से गांधी जी स्नेह से उन्हे 'शादी काका' भी कहते थे। १९४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रह में जेल से रिहाई के बाद जमनालाल वर्धा लौट आए। ११ फरवरी १९४२ को मस्तिष्क की नस फट जाने के कारण सेठ जमनालाल इस दुनिया को अलविदा कह गए। उनकी स्मृति में सामाजिक क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने के लिए **'जमनालाल बजाज पुरस्कार'** की स्थापना की गई।

रामकृष्ण परमहंस से जानिए क्या होती है सच्ची तीर्थयात्रा

एक बार रामकृष्ण परमहंस तीर्थयात्रा पर निकले थे। उनके साथ दक्षिणेश्वर के काली मंदिर के प्रबंधक मथुर बाबू और परिवार के कुछ लोग थे। अपनी यात्रा क्रम में एक बार पूरी टोली देवघर में ठहरी। उन दिनों वह पूरा नगर तथा आसपास के गांव भयंकर अकाल की चपेट में थे, वहां के स्थानीय आदिवासी संथाल लोग कई दिनों से भूखे थे। उनमें से कुछ लोग भोजन के अभाव में परलोक सिधार चुके थे।

दुर्बलता के कारण उन लोगों के शरीर अस्थिपिंजर जैसे दिखते थे। उनके पास तन ढकने के लिए पर्याप्त कपड़े भी नहीं थे। रामकृष्ण इस दृश्य को सहन नहीं कर सके। वह भी उन संथालों के बीच बैठकर रोने लगे। उन्होंने मधुर बाबू से उनके कष्टों को दूर करने को कहा। मधुर बाबू बोले यहां तो बहुत सारे गरीब लोग हैं, मैं इन सब लोगों को सहायता कैसे कर सकता हूँ? फिर हमें काशी, प्रयाग, हरिद्वार आदि तीर्थों का खर्च भी निपटाना होगा।

रामकृष्ण ने कहा–इन अकाल पीड़ितों को इस हाल में छोड़कर मैं तीर्थयात्रा पर नहीं जाना चाहता। ये जगदम्बा की संतान हैं। मैं भी इनके साथ आमरण उपवास करूंगा। तुम्हारी तीर्थयात्रा की मैं बिल्कुल भी परवाह नहीं करता।

हार मानकर मधुर बाबू को उन संथाल आदिवासियों को खिलाने और वस्त्र देने में काफी धन खर्च करना पड़ा और तभी श्री रामकृष्ण आगे की यात्रा जारी रखने को सहमत हुए।

गर्म पानी सेहत के लिए कितना असरदार

पानी सेहत के लिए बहुत फायदेमन्द होता है। पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से कई सारी बीमारियों से बचाव होता है और शरीर स्वस्थ रहता है। हालांकि कहा जाता है कि ठण्डा पानी पीने के बजाए गर्म पानी ज्यादा सेहतमन्द होता है। इस कारण लोग अक्सर गर्म पानी पीते हैं। जिन लोगों का वजन अधिक होता है, वह ही गर्म पानी का सेवन करते है। उन्हें लगता है कि गर्म पानी ज्यादा पीने से वजन कम होता है। गले में खराश, सर्दी-खाँसी और जुकाम में भी लोग गर्म पानी पीते है। लेकिन एक्सपर्ट के मुताबिक ठण्डा और गर्म पानी पीने के मुकाबले में नॉर्मल पानी पीना ज्यादा असरदार है।

कब्ज से राहत

हल्के गर्म पानी का सेवन पेट साफ करता है और मल त्याग में समस्या नहीं होती। एसिडिटी की शिकायत होने पर हल्के गर्म पानी का सेवन कर सकते हैं। इससे खाना खाने के बाद कब्ज की शिकायत नहीं होती और पेट में ऐंठन व दर्द कम हो सकता हैं।

वजन घटाने के लिए

भोजन पचाने के लिए गर्म पानी असरदार है। हल्का गुनगुना पानी सुबह शाम खाने के बाद पीना चाहिए, इससे वजन कम कर सकते हैं। स्वास्थ्य लाभ होने के साथ ही मन शान्त रहता है और अधिक भूख भी नहीं लगती।

पाचन तंत्र में सुधार

पाचन शक्ति को बढ़ाने के लिए गर्म पानी का सेवन कर सकते है। हल्का गर्म पानी पेट और आँतो को हाइड्रेट करने में मदद करता है। ऐसे मे सही मात्रा में गर्म पानी का सेवन कर सकते हैं।

गर्म पानी क्यों पीना चाहिए?

- पानी को उबालते हुए जब उसका चौथाई हिस्सा जल जाये अर्थात तीन हिस्सा पानी ही बचे तो ऐसे पानी को ठण्डा करके पीना श्रेष्ठ है। ऐसा गर्म पानी का सेवन हमारे शरीर के वात, कफ और पित्त तीनो ही दोषों को समाप्त करता है। नित्य सुबह खाली पेट व रात्रि को खाने के बाद गर्म पानी पीने से पेट की सभी समस्यायें खत्म होती है और गैस जैसी समस्याएँ निकट भी नही आती है।

- युवावस्था में चेहरे पर मुहाँसे, पिंपल्स, एक्ने, छोटे-छोटे दाने फुन्सियां निकलना एक आम बात है, अधिकतर कील मुहाँसे तैलीय त्वचा पर निकलते हैं, अतः चेहरे पर क्रीम तेल कोई चिकनाई युक्त पदार्थ न लगायें, ये हार्मोन की गड़बड़ी, त्वचा के सफाई न करने, पेट की खराबी से भी होते हैं।
- नित्य गर्म पानी का सेवन करने से शरीर में ब्लड सर्कुलेशन तेज होता है, हृदय भी स्वस्थ रहता है। अगर कोई व्यक्ति पथरी की समस्या से परेशान है तो वह सुबह शाम दोनो समय भोजन करने के पश्चात् एक गिलास गुनगुने पानी का सेवन अवश्य ही करें।
- नित्य एक गिलास गर्म पानी में एक नींबू का रस काली मिर्च व काला नमक डालकर पीने से पेट का भारीपन दूर होता है, भूख भी खुलकर लगती है। जुकाम में गर्म पानी पीने से बहुत आराम मिलता है। इससे कफ और सर्दी शीघ्र दूर होते हैं।
- गर्म पानी वजन घटाने से भी बहुत मददगार होता है, रोज सुबह खाली पेट गर्म पानी में आधा नींबू, व एक चम्मच शहद मिलाकर पीने से शरीर स्लिम होता है। बुखार में गर्म पानी पीना अधिक लाभदायक होता है।

"आयुष्मान कार्ड योजना का कौन ले सकता है लाभ? कैसे करें आवेदन"

आज की दौड़ती-भागती जिंदगी में कब कौन किस बीमारी से घिर जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता है। हमारे आसपास कई ऐसी बीमारियां और वायरस घूम रहे हैं, जो हमें पलक झपकते ही अपना शिकार बना लेते है। ऐसे में बीमार पड़ने पर इलाज करवाना पड़ता है या कई बार तो अस्पताल में भर्ती तक होना पड़ता है। लेकिन जो लोग गरीब वर्ग से आते हैं और जो आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं, वो लोग अस्पताल का बिल चुकाने में असमर्थ होते हैं। ऐसे में अगर आप भी पात्र हैं, तो फिर आप भी आयुष्मान कार्ड बनवाकर अपना ५ लाख रुपये तक का मुफ्त में इलाज करवा सकते हैं।

पहले योजना के बारे में जाने

दरअसल, केंद्र सरकार द्वारा आयुष्मान भारत योजना की शुरुआत की गई, लेकिन अब इस योजना से राज्य सरकारें भी जुड़ गई है। ऐसे में इस योजना का नाम अब बदलकर 'आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना-मुख्यमंत्री योजना कर दिया है। इसमें आयुष्मान कार्डधारक सूचीबद्ध अस्पतालों में अपना ५ लाख रुपये तक का मुफ्त में इलाज करवा सकता है।

ऐसे चेक कर सकते हैं अपनी पात्रता :-

स्टेप १

सबसे पहले इसके आधिकारिक पोर्टल pmjay.gov.in पर जाएं फिर 'Am I Eligible' वाले विकल्प पर क्लिक करें

अब आपने मोबाइल नंबर को वेरिफाई करवाएं, जिसके लिए फोन पर आए ओटीपी को दर्ज करें

स्टेप २

फिर नजर आ रहे हैं दो ऑप्शन में से पहले में अपना राज्य चुन लें जबकि दूसरे में मोबाइल नंबर और राशन कार्ड नंबर से सर्च करें। इसके बाद आपकी पात्रता आपको पता चल जाएगी। इन दस्तावेजों की होगी जरूरत

आप आयुष्मान कार्ड बनवाने के लिए आवेदन करना चाहते हैं, तो इसके लिए आपको कुछ दस्तावेज चाहिए। इसमें आधार कार्ड, निवास प्रमाण पत्र, राशन कार्ड और एक मोबाइल नंबर शामिल है।

"ये है आवेदन का तरीका"

आप पात्र हैं, तो आपको आयुष्मान कार्ड बनवाने के लिए इसके आधिकारिक लिंक pmjay.gov.in के जरिए लॉगिन करना है। यहां पर आपको आगे का प्रोसेस फॉलो करना है और फिर आपका कार्ड बन जाता है।

देव-स्तुति

[गतांक से आगे]

– डॉ. जुगल किशोर सर्राफ

श्रीशङ्कर उवाच

अजानता ते परमानुभावं
कृतं मयाघं भवतः प्रियाणाम्।
विधोहि तस्यापचितिं विधात—
र्मुच्येत यन्नाम्न्युदिते नारकोऽपि।।

हे प्रभु, हे परम नियन्ता, मैंने आपकी असीम शक्ति समझे बिना आपके परम प्रिय भक्त के प्रति अपराध किया है। कृपया मुझे इस अपराध के परिणाम से बचा लें। आप हर काम कर सकते हैं क्योंकि यदि कोई व्यक्ति नरक जाने के लायक हो, उसके भी हृदय में अपने पवित्र नाम को जगाकर आप उसका उद्धार कर सकते हैं।

नमः सुनाभाखिलधर्मसेतवे।
ह्यधर्मशीलासुरधूमकेतवे।
त्रैलोक्यगोपाय विशुद्धवर्चसे
मनोजवायाद्भुतकर्मणे गृणे।।

हे सुदर्शन, तुम्हारी नाभि अत्यन्त शुभ है, अतएव तुम धर्म की रक्षा करने वाले हो। तुम अधार्मिक असुरों के लिए अशुभ पुच्छल तारे के सदृश हो। निस्सन्देह, तुम्ही तीनों लोकों के पालनकर्ता हो। तुम दिव्य तेज से परीपूर्ण हो, तुम मन के सदृश तीव्रगामी हो और अद्भुत कर्म करने वाले हो। मैं केवल नमः शब्द कहकर तुम्हें सादर नमस्कार करता हूँ।

अंशुमानुवाच

प्रशान्त मायागुणकर्मलिङ्ग—
मनामरूपं सदसद्विमुक्तम्।
ज्ञानोपदेशाय गृहीतदेहं
नमामहे त्वां पुरुषं पुराणम्।।

हे परम शान्तिमय स्वामी, यद्यपि यह प्रकृति, समस्त सकाम कर्म तथा उनके परिणाम स्वरूप भौतिक नाम तथा रूप आपकी सृष्टि हैं, तथापि आप उनसे अप्रभावित रहते हैं। अतएव आपका दिव्य नाम भौतिक नामों से भिन्न है और आपका स्वरूप भौतिक स्वरूपों से पूरी तरह अलग है। आप भगवद्गीता जैसे ज्ञान का हमें उपदेश देने के लिए ही भौतिक शरीर के जैसी समान रूप धारण करते हैं लेकिन वस्तुतः आप परम आदि पुरुष ही रहते हैं। अतएव मैं आपको सादर नमस्कार करता हूँ।

क्षीरं यथा दधि विकारविशेषयोगात्
सज्जायते न हि ततः पृथगस्ति हेतोः।
यः शम्भुतामपि तथा समुपैति कार्याद्
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

जब दूध में जामन डाला जाता हैं तो यह दही में बदल जाता है, किन्तु वास्तव में यह दही दूध के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। इसी तरह भगवान् गोविन्द भौतिक व्यवहार के निमित्त शिवजी का रूप धारण करते हैं। मैं भगवान् गोविन्द के चरणकमलों को सादर नमस्कार करता हूँ।

नमो ब्राह्मण्यदेवाय गो ब्राह्मणाहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।

मैं परम सत्य भगवान् कृष्ण को सादर नमस्कार करता हूँ जो ब्राह्मणों, गायों तथा समस्त जीवों के सुभचिन्तक हैं। मैं उन गोविन्द को बारम्बार नमस्कार करता हूँ जो समस्त इन्द्रियों के आनन्द के आगार हैं।

विश्वामित्राध्वरे येन मारीचाद्या निशाचराः।
पश्यतो लक्ष्मणस्यैव हता नैर्ऋतपुङ्गवाः।।

अयोध्यानरेश भगवान् रामचन्द्र ने विश्वामित्र द्वारा सम्पन्न किये गए यज्ञ के प्रक्षेत्र में अनेक राक्षसों तथा असभ्य जनों का वध किया जो तमोगुण से प्रभावित होकर रात में विचरण करते थे। ऐसे रामचन्द्र जिन्होंने लक्ष्मण की उपस्थिति में इन राक्षसों का वध किया हमारी रक्षा करने की कृपा करें।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय रामायाकुंठमेधसे।
उत्तमश्लोकधुर्याय न्यस्तदंडार्पिताङ्घये।।

हे प्रभु, आप भगवान् हैं और आपने ब्राह्मणों को अपना आराध्य देव स्वीकार किया है। आपका ज्ञान तथा स्मृति उद्विग्नता से कभी विचलित नहीं होता। आप इस संसार के समस्त विख्यात पुरुषों में प्रधान है और आपके चरणों की पूजा मुनियों द्वारा की जाती है जो दंड के क्षेत्र से परे हैं। हे भगवान् रामचन्द्र हम आपको सादर नमस्कार करते हैं।

न धमं न जनं न सुन्दरीं कवितां वा जगदीश कामये।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे भवताद् भक्तिरहैतुकी त्वयि।।

हे ब्रह्मांड के स्वामी! मैं न तो धन चाहता हूँ, न अनुयायी, न सुन्दर पत्नी, न लच्छेदार भाषा में वर्णन किये हुए सकाम कर्म। मेरी यही इच्छा है कि जन्म-जन्मांतर आपकी अहैतुकी भक्ति करता रहूँ।

नमस्तुभ्यं भगवते वासुदेवाय वेधसे।
सर्वभूताधिवासाय शान्ताय बृहते नमः।।

हे भगवान् वासुदेव, हे पूर्ण पुरुषोत्तम परमेश्वर, आप समस्त विराट जगत के स्रष्टा हैं। आप प्रत्येक जीव के हृदय में परमात्मा रूप में निवास करते हैं और सूक्ष्मतम से सूक्ष्मतर होते हुए भी बृहत्तम से बृहत्तर हैं तथा सर्वव्यापक हैं। आप परम शान्त लगते हैं मानो आपको कुछ नहीं करना-धरना लेकिन सर्वव्यापक स्वभाव एवं सर्व ऐश्वर्य से पूर्ण होने के कारण हैं। अतएव मैं आपको सादर नमस्कार करती हूँ।

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED (RKFL) is India's Second biggest and leading Integrated Forging cum Machining Company. RKFL have Closed Die Forging Hammers, Upsetters, Ring Rolling & Press Lines from 2000 to 12500 Tons. RKFL is a supplier of major OEM's, Tier 1, suppliers globally for Automotive, Mining, Earth Moving, Oil & Gas, Railways and General Engineering Industries.

The Company is accredited with IATF 16949, ISO 14001 (EMS), OSHAS 18001, AS9100D and Testing Laboratories are NABL accredited (ISO/IEC 17025:2005). Its Corporate Office is located is Kolkata & Facilities are in Jamshedpur.

RKFL's product is exported to North America, South America, Europe, Australia, UK, Turkey and Asian Countries.

Regd. & Corporate Office:

23, Circus Avenue, 9th Floor,
Kolkata – 700 017, West Bengal, India.
Office phone : +(91) 033 4082 0900 / 7122 0900
Email – info@ramkrishnaforgings.com
Web site – www.ramkrishnaforgings.com

Overseas Office at:

Detroit-USA, Toluca-Mexico, Istanbul-Turkey.

Plants at:

Plant I, III, IV, V, VI & VII at Jamshedpur, India
Plant: II at Liluah, Howrah, India

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2021-2023
Date of Publication - 28th November 2022
RNI Regd. No. 2866/1968

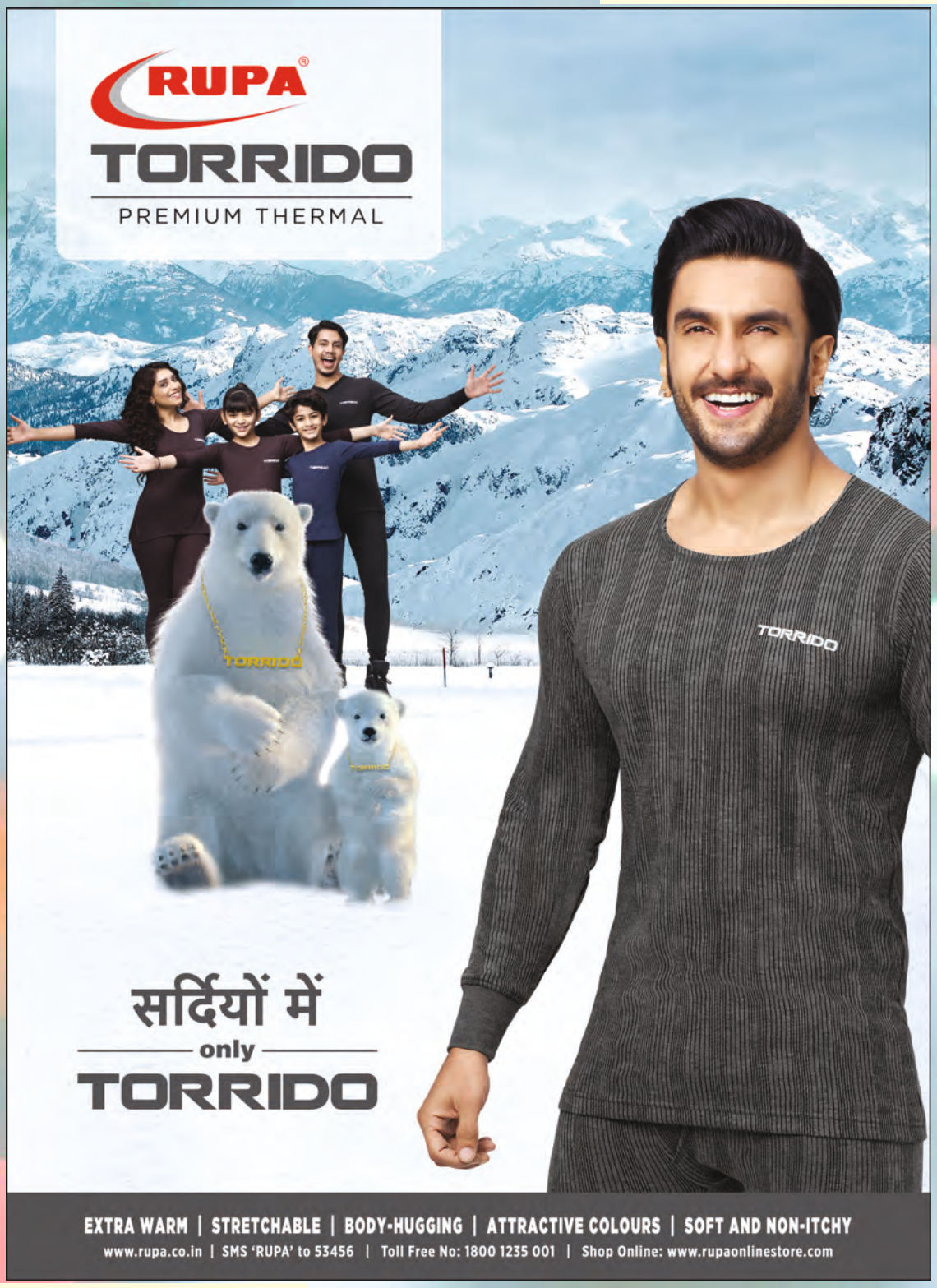

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com